पी. एण्ड एस. बैंक

# राजभाषा अंकुर

मार्च 2016

## जल बचाएं, पर्यावरण बचाएं, जीवन बचाएं

# पंजाब एण्ड सिंध बैंक

(भारत सरकार का उपक्रम)

## राजभाषा विभाग

# बैंक को उत्कृष्टता पुरस्कार

एसोसिएटेड चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री ऑफ इंडिया (ASSOCHAM) द्वारा लघु बैंक क्लास तथा ग्रामीण बैंकिंग श्रेणी के अंतर्गत पंजाब एण्ड सिंध बैंक को एसोचैम सामाजिक बैंकिंग उत्कृष्टता पुरस्कार से नवाजा गया। वित्त राज्य मंत्री श्री जयंत सिन्हा के कर-कमलों द्वारा पुरस्कार ग्रहण करते बैंक के कार्यकारी निदेशक श्री ए. के. जैन। चित्र में मुख्य महाप्रबंधक श्री इकबाल सिंह भाटिया भी दिखाई दे रहे हैं।

**पंजाब एण्ड सिंध बैंक**

प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग की हिंदी पत्रिका

# राजभाषा अंकुर

(केवल आंतरिक वितरण हेतु)

'बैंक हाउस', प्रथम तल, 21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110 125


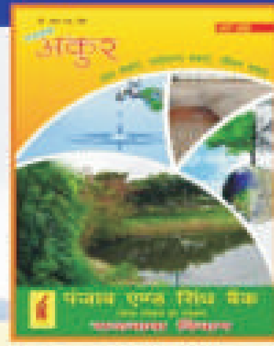


**मार्च, 2016**


**मुख्य संरक्षक**

**श्री जतिन्दरबीर सिंह, आई.ए.एस.**

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

**संरक्षक**

**श्री एम. के. जैन एवं श्री ए. के. जैन**

कार्यकारी निदेशक

**मुख्य संपादक**

**श्री दीन दयाल शर्मा**

महाप्रबंधक (राजभाषा)

**संपादक व प्रकाशक**

**श्री राजिंदर सिंह बेवली**

मुख्य प्रबंधक व
प्रभारी, राजभाषा

**संपादक मंडल**

**श्री कंवर अशोक**

**श्री राजीव कुमार राय**

वरिष्ठ प्रबंधक, राजभाषा

**डॉ. नीरू पाठक**

प्रबंधक

**श्री सोनी कुमार**

राजभाषा अधिकारी



ई-मेल : hindipatrika@psb.co.in



**पंजीकरण सं. : एफ. 2(25) प्रैस. 91**



'राजभाषा अंकुर' में प्रकाशित सामग्री में दिए गए विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। पंजाब एण्ड सिंध बैंक का प्रकाशित विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है। सामग्री की मौलिकता एवं कॉपी राइट अधिकारों के प्रति भी लेखक स्वयं उत्तरदायी है।



**मुद्रक : मोहन प्रिंटिंग प्रेस**

5/35ए, कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110015

फोन : 98100 87743


# विषय-सूची


| क्र.सं. | विवरण | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|
| 1. | संपादक मंडल / विषय-सूची | 1 |
| 2. | आपकी कलम से | 2 |
| 3. | संपादकीय | 3 |
| 4. | रहिमन पानी राखिए..... | 4-7 |
| 5. | सौर ऊर्जा का उपयोग | 8-10 |
| 6. | उद्घाटन | 11 |
| 7. | प्रकृति का मशीनीकरण : वैश्विक चिंता | 12-14 |
| 8. | विमोचन | 15 |
| 9. | अखिल भारतीय राजभाषा अधिकारी सम्मेलन | 16-17 |
| 10. | काउंटर (असमिया कहानी अनुवाद सहित) | 18-19 |
| 11. | हिंदी अनुवाद जटिलता एवं समाधान | 20 |
| 12. | राजभाषा शील्ड | 21 |
| 13. | सतर्कता प्रशिक्षण कार्यक्रम | 22-23 |
| 14. | मस्तिष्क मंथन (प्रधान कार्यालय) | 24 |
| 15. | बजट शब्दावली | 25-29 |
| 16. | राजभाषा प्रयोग आपसी संवाद सार्थक दिशा | 29 |
| 17. | काव्य मंजूषा | 30-31 |
| 18. | हमारी मातृभाषा हमारा परिचय | 32-33 |
| 19. | अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस - महारानी अहिल्याबाई होल्कर | 34-35 |
| 20. | मस्तिष्क मंथन - आँचलिक कार्यालय | 36 |
| 21. | कार्टून कोना, ज़रा सोचिए | 37 |
| 22. | अपाहिज़ | 38-39 |
| 23. | हिंदी/पंजाबी कार्यशाला | 40-41 |
| 24. | बढ़ता जल संकट और जल प्रबंधन | 42-43 |
| 25. | संसदीय राजभाषा समिति/एटीएम अवार्ड | 44 |

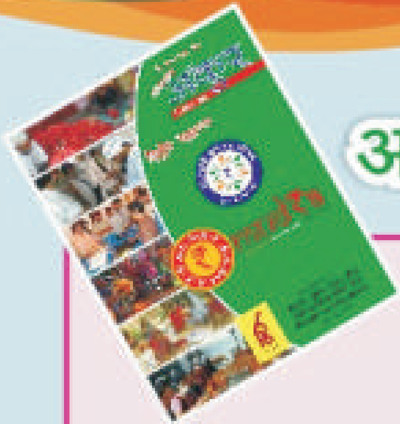

# आपकी कलम से....

हमें पीएसबी राजभाषा अंकुर का दिसंबर, 2015 अंक प्राप्त हुआ। राजभाषा अंकुर को "दिल्ली बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति" की ओर से प्रथम पुरस्कार प्राप्त होने पर हार्दिक बधाई। इसके मूल में पत्रिका के कलेवर को रोचक, सारगर्भित, प्रेरक और उपयोगी बनाने के प्रति सार्थक सोच है, जोकि इस अंक में दिखाई पड़ रही है। श्री हर्षवीर सिंह जी के आलेख "प्रधानमंत्री जन-धन योजना और हमारा बैंक" में योजना की जानकारी के साथ अपने बैंक की स्थिति भी बताई गई है। आलेख में एक्सीडेंटल बीमा जैसे सरल शब्दों का प्रयोग किया गया है। डॉ. वेद प्रकाश दूबे जी का आलेख "वन नहीं रहेंगे तो दर्द की राहें फूटेंगी" हमें वन संरक्षण के लिए प्रेरित करता है। क्षेत्रीय भाषा संथाली की कविता "स्वाधीन भारत में नारी का स्थान" वैचारिकता से परिपूर्ण है और यह प्रयोग एक उपयोगी और भाषा के माध्यम से जन को जोड़ने की मुहिम भी है। "ज़रा सोचिए" कॉलम हमेशा प्रेरित करता है और इस बार भी श्री इन्द्रजीत सिंह ने सोचने के लिए विवश कर दिया। श्री पीयूष कुमार की कविता, श्री प्रदीप कुमार राय का कार्टून कोना, श्री कमलरूप सिंह का "बेताल फिर बोल पड़ा" और अन्य लेख एवं रिपोर्ट सार्थक सोच के परिणाम हैं।

पत्रिका के प्रकाशन में विषयों की सेटिंग और प्रूफ की गलतियों का न होना संपादक मंडल के परिश्रम और अनुभव का परिणाम है।

**जसमीत सिंह पसरीचा**
आंचलिक प्रबंधक, मुंबई

आपके बैंक द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' का नवीनतम अंक प्राप्त हुआ। मैंने नोट किया है कि यह पत्रिका अंक प्रति अंक नई ऊंचाइयों को छूने को अग्रसर है। पत्रिका का कवर जहां एक ओर प्रधानमंत्री जी की योजनाओं का उल्लेख करता है वहीं दूसरी ओर यह स्वच्छ पर्यावरण के सजीव चित्र के माध्यम से 'स्वस्थ जीवन' की कल्पना को चरितार्थ करता है।

आपकी पत्रिका के कुछ अंकों से प्रादेशिक भाषाओं की रचनाओं को (उनके लेखकों के द्वारा ही हिंदी में भी भेजा जाना) प्रकाशित किया जाना निसंदेह भारतीय भाषाओं के प्रति आपके मोह को दर्शाता है। साथ ही, नियमित फीचर 'ज़रा सोचिए' के द्वारा आप मानव संवेदनाओं को पाठकों तक पहुंचाने में सफल रहे हैं।

वित्त मंत्रालयों की बैठकों को भी एक अंग बनाकर पत्रिका अपने राजभाषा संबंधी दायित्वों का बड़ी खूबसूरती से निर्वहन कर रही है। महिला सुरक्षा जैसे विषयों को समाहित कर, पत्रिका समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को भी पूरा कर रही है।

इस सुंदर व जानकारीपरक प्रकाशन के लिए आप, पत्रिका के संपादक श्री राजेंद्र सिंह बेवली तथा संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। आशा है भविष्य में और सुंदर प्रकाशन पढ़ने को मिलते रहेंगे। निःसंदेह नवोन्मेषिता, रचनाधर्मिता, सृजनात्मकता के अद्भुत भंडार का संगम है "अंकुर"।

शुभकामनाओं सहित,

**डॉ. वेद प्रकाश दूबे**
संयुक्त निदेशक (राजभाषा)
वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग, नई दिल्ली

सर्वप्रथम, राजभाषा अंकुर को दिल्ली बैंक नराकास से प्रथम पुरस्कार मिलने पर मेरी बधाई स्वीकार करें। वस्तुतः आपकी पत्रिका रचनाओं की विषय-विविधता और प्रकाशन की दृष्टि से निसंदेह सर्वश्रेष्ठ स्थान की हकदार है। पत्रिका के ताजा अंक में एक ओर जहां सरकारी योजनाओं और बैंक की राजभाषा गतिविधियों/उपलब्धियों की जानकारी दी गई है, वहीं दूसरी ओर बैंकिंग के साथ-साथ अन्य जीवनोपयोगी विषयों-धर्म, पर्यावरण, भ्रष्टाचार और महिला सुरक्षा आदि पर भी सारगर्भित लेख दिए हैं। 'सोच और कर्म' लेख का संदेश अनुसरणीय है कि अपनी नियति को सकारात्मक सोच से स्वयं तय करना संभव है। संथाली कविता का हिंदी अनुवाद सहित प्रकाशन पत्रिका का विशेष आकर्षण है।

मेरी शुभकामनाएं !

**उषा किरण**
पूर्व उप महा प्रबंधक, आई.डी.बी.आई. बैंक

*विशेष अवसरों पर उपहार-स्वरूप एक पौधा देने की आदत बनाएं।*

# संपादकीय

साथियो,

बैंक द्वारा उठाए गए विभिन्न सकारात्मक कदमों तथा आप सबके सतत् प्रयासों से आज के कठिन आर्थिक दौर में भी बैंक ने अपनी उपलब्धियां दर्ज की हैं। हम सभी बैंक के वर्ष 2015-16 के वित्तीय परिणामों की घोषणा की प्रतीक्षा कर रहे हैं। जब तक यह पत्रिका आपके हाथ में आएगा, तब तक ये परिणाम घोषित हो चुके होंगे।

'राजभाषा अंकुर' पत्रिक भी आंतरिक संचारक के रूप में अपने सभी रचनाकारों के सहयोग से राजभाषा हिंदी के विकास के साथ बैंक की विकास यात्रा के महत्वपूर्ण सोपानों को संजोए अपना सहयोग देने में सदैव तत्पर रही है। हमारी पत्रिका ''राजभाषा अंकुर'' नित नई ऊँचाइयों को छू रही है और इसी कड़ी में दिल्ली बैंक नराकास से प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने के पश्चात्, भारतीय रिज़र्व बैंक के वर्ष 2014-15 के राजभाषा शील्ड पुरस्कार के लिए भी चयनित हुई है। पत्रिका के संपादक मंडल के साथ आप सब भी बधाई के पात्र हैं।

बैंक समाज के प्रति संवेदनशील संस्थाएं हैं और पत्रिकाएं इस संवेदनशीलता को बड़ी ही शालीनता से अपने पाठकों तक पहुँचाने का काम करती हैं। इन दिनों देश में पानी की कमी और सूखे जैसी समस्याएं विकाराल रूप धारण कर चुकी हैं। इस अंक में ''सूत्र वाक्य'' भी पानी और प्रकृति के प्रति मनुष्य की संवेदनहीनता को दर्शाने का प्रयास कर रहे हैं। श्री पवन कुमार जैन ने इस समस्या को अपने लेख 'रहिमन पानी राखिए.....' में न केवल बड़ी बारीकी से उकेरा है बल्कि अपने हाइकु के माध्यम से इसके महत्त्व को आप तक पहुँचाने की कोशिश भी की है। श्री ताराचंद के लेख 'बढ़ता जल संकट और जल प्रबंधन' तथा सुश्री भारती का लेख 'प्रकृति का मशीनीकरण - वैश्विक चिंता' में पर्यावरण में बढ़ता प्रदूषण प्राणी मात्र के जीवन को किस प्रकार प्रभावित कर रहा है, दर्शाता है। वित्त मंत्रालय के पूर्व निदेशक श्री दर्शन सिंह जग्गी ने देश के पहले बजट की दिलचस्प जानकारी देते हुए बजट शब्दावली से पाठकों को परिचित करवाने का प्रयास किया है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेषत डॉ. नीरू पाठक का लेख पठनीय है।

आशा है कि बैंकिंग एवं साहित्यिक विविधताओं से परिपूर्ण 'राजभाषा अंकुर' का यह अंक भी आपको पसंद आएगा। पत्रिका आपको कैसी लगी, कृपया अपनी राय हमें अवश्य भेजें।

(दीन दयाल शर्मा)
महाप्रबंधक (राजभाषा)

# रहिमन पानी राखिए....

**पवन कुमार जैन**

चित्रकार द्वारा बनाए जाने वाले किसी भी प्राकृतिक चित्रण में कल-कल करती सरिता, सरोवर या पहाड़ी नदी का दृश्य हमारे मन को सुख देता है, कवियों द्वारा प्रकृति की मनोहारी कविताओं में पानी के तमाम पर्यायवाची शब्द जैसे जल, वारि, नीर आदि शब्दों का भिन्न-भिन्न स्थानों पर प्रयोग हमारी कल्पना को और उड़ान देता है, लहलहाते खेत, ऊँचे ऊँचे फलदार पेड़, भरे हुए तालाब, बहती हुई नदियाँ, ठाठे मारता समंदर, बर्फ की चादर ओढे इठलाते पहाड़ों को देखकर लगता है कि यह धरती हमें जीवन देने के लिए उतावली हुई जाती है। हमारी संस्कृति में पानी का महत्व इसी बात से लगाया जा सकता है कि देवराज इन्द्र ने जल का भार स्वयं अपने ऊपर लिया था.. जबकि शायद ही हम जानते हों कि इस समय जल मंत्रालय किसके पास है और उसकी क्या गतिविधियाँ हैं.. इस समय उज्जैन में सिंहस्थ चल रहा है... कुंभ वस्तुतः मनुष्य और उसके परिवेश के बीच तालमेल बनाने के उपक्रम के रूप में विकसित हुए। इनका बड़ा उद्देश्य था नदियों का संरक्षण..... पुराणों में कहा गया है कि नदियों की समृद्धि में राजा प्रजा और ऋषि तीनों साझीदार हुआ करते थे।

सदियों से प्रकृति ने हमें एक माँ की तरह पाला-पोसा है। हमें हमारी तुच्छ इच्छाओं के लिए किए गए अपराध के लिए क्षमा किया है लेकिन अब लगता है कि अब वह अशक्त हो गई है.. हमें हमारे हाल पर छोड़ देने के लिए बाध्य हो गई है। हजारों साल में इतने झंझावातों में विकसित हुई यह मानव सभ्यता अपने लालच और अहम के कारण विनाश के कगार पर खड़ी हुई है। जीवन के होने में पानी का बहुत बड़ा महत्व है। इसीलिए वैज्ञानिक जब धरती से अलग किसी ग्रह को खोजते हैं और उस पर कदम रखते हैं तो सबसे पहले वहाँ पर पानी के होने या न होने की संभावना पर बल देते हैं, यदि पानी है तभी जीवन संभव है वरना मिट्टी पत्थर के टुकड़ों का कोई महत्व नहीं है। अपनी हाइकु कविता की रचना के समय मैंने पानी पर दो हाइकु लिखे थे ... प्रसंगवश मैं आप लोगों से यह जरूर साझा करना चाहूँगा...

**बचा लो पानी**
**वरना पीना होगा**
**आँखों का पानी।**

**हे कोलम्बस**
**ढूढो नई दुनिया**
**जहाँ हो पानी।**

प्राचीन इतिहास पर यदि आप नजर डालें तो देखेंगे कि दुनिया में जितनी भी सभ्यताएँ विकसित हुईं वह किसी न किसी नदी के किनारे ही पनपीं। जैसे जैसे विकास होता गया ... पानी की तलाश में कुएँ, तालाब, पोखर, बनाए जाने लगे। जब इससे भी काम न चला और मशीन आ गई तो

पानी अब समस्या ही नहीं रह गया है, बल्कि ज़िंदगी का मकसद भी बन गया है। जिन घरों तक इस आग की तपिश नहीं पहुँची है, वे अपने को सुरक्षित न समझें, बल्कि अपनी बारी की प्रतीक्षा करें......

**अच्छा है अब भी समझ जाएं.......**

फिर धरती के सीने से बेतरह और बेखौफ होकर जल दोहन होने लगा। इंसान ने अपने जीने के लिए प्रकृति को कुचलने में कोई दर्द महसूस नहीं किया ... जंगल के जंगल साफ होने लगे... सूरज के अभिमान को दबा देने वाले गगनचुम्बी पेड़ों की जगह गगनचुम्बी इमारतों ने ले ली। एक वर्ग और एक विभाग बना दिया गया जिसे इन पेड़ों, जंगलों, पहाड़ों और नदियों की रक्षा का भार दिया गया। लेकिन रक्षक खुद भक्षक बन गए। हर इंसान का अपना अपना लालच जुड़ा हुआ था। हथेलियों की रेखाओं में भविष्य तलाश करने वालों ने धरती की हथेली पर बनी नदियों और जंगलों की रेखाओं को मिटाने की कसम खाली। सत्ताएँ सत्ता में चूर रहीं और जनता कबूतर की तरह आँख बंद किए रही कि बिल्ली हमें नहीं देख रही होगी। लेकिन यह हमारा वहम था... हमारे बोए हुए बीज अब जमने लगे हैं... स्थितियाँ भयावह होती जा रही हैं... जरा एक नजर इन खबरों पर डालें....

- तेलंगाना की राजधानी हैदराबाद में चार जलाशय सूख गए हैं.. शहर में वाटर इमरजेंसी लागू कर दी गई है.. तापमान 43 डिग्री तक पहुँच गया है।
- महाराष्ट्र के साँगली में सूखाग्रस्त लातूर की स्थिति भयावह हो गई है। लोग एक-एक बूँद पानी के लिए तरस रहे हैं... दिल्ली से जलदूत ट्रेन द्वारा पानी भेजा जा रहा है।
- मराठवाड़ा के बीड इलाके के सावलखेड गाँव में पानी भरने के दौरान हीट स्ट्रोक से 11 साल की बच्ची की मौत हो गई।
- क्रिकेट ग्राउंड और हैलीपेड पर छिड़काव के लिए हजारों लीटर पानी का उपयोग किया गया
- बुंदेलखंड में पानी के लिए त्राहि-त्राहि .. जलाशय सूखे, पशुओं की जान खतरे में
- तीसरा विश्वयुद्ध पानी के लिए लड़ा जाएगा
- पानी की कमी के कारण सूखाग्रस्त क्षेत्र के आसपास के इलाकों में पलायन शुरू हो गया है। महाराष्ट्र राज्य के लातूर और नंदेड़ जिलों से लगभग 200 लोग पलायन करके मुम्बई पहुँच गए हैं। यह शुरुआत अच्छी नहीं है।
- उत्तराखंड के नैनीताल और उसके आसपास की झीलों का जलस्तर कम हो गया है। नैनी झील के किनारों से काफी दूर तक मलबे का मैदान नजर आने लगा है।
- पानी की किल्लत से कल- कारखाने भी बंद होने की कगार पर हैं। इससे जहाँ बेरोजगारी बढेगी वहीं अपराधों में भी बढोत्तरी होगी।
- पहली बार भारतीय मौसम विभाग ने यह स्वीकार किया है कि हाल के वर्षों में गर्मियों के बढते दौर की वजह से ग्लोबल वार्मिंग में और पिछले दो वर्षों के दौरान अलनीनो में खोजी जा सकती है। अलनीनो दुनिया भर के मौसमों के मिजाज में देखी जाने वाली वह गड़बड़ी है जो प्रशांत महासागर के बीच के हिस्से का तापमान कभी कभी अचानक बढ जाने की वजह से पैदा होती है।
- पश्चिम बंगाल के फरक्का में गंगा का जलस्तर इतना नीचे चला गया कि 2100 मेगावाट वाला फरक्का पावर प्लाँट बंद कर देना पड़ा। इससे 1500 मेगावाट बिजली की कमी पड़ गई और पूर्वी भारत के कई हिस्सों में ब्लैक आउट की नौबत आ गई।
- बढते जलसंकट का असर जेएनपीटी बंदरगाह में दुनिया भर से आने वाले जहाजों पर भी पड़ने लगा है। इस

*कपड़े के थैले इस्तेमाल करें, पोलिथिन व प्लास्टिक को 'ना' कहें*

बंदरगाह पर प्रति माह करीब 150 से 170 जहाज अपना लंगर डालते हैं। इन सभी जहाजों में करीब 5 से 6 लाख लीटर पानी संचय की क्षमता होती है। जेएनपीटी को होने वाली जलापूर्ति में भी करीब 50 प्रतिशत की कटौती की जा रही है। देश के सबसे बड़े कंटेनर बंदरगाह में भी पानी का संकट गहराने लगा है।

- अप्रैल के दूसरे सप्ताह में तापमान पर नजर डालें जो रोंगटे खड़े कर देने वाला है। मध्य प्रदेश के खरगौन में 42 डिग्री, ग्वालियर में 41.2 डिग्री और छत्तीसगढ के रायपुर , बिलासपुर और दुर्ग जैसे शहरों का तापमान 44 डिग्री तक पहुँच गया। झारखंड के जमशेदपुर में 43.1 डिग्री और सबसे अधिक तापमान हैदराबाद में 44 डिग्री तक पहुँच गया। मई और जून की तपिश के बारे में अगर हम अंदाजा लगाएँ तो हमारे शरीर का तापमान थर्मामीटर के दूसरे छोर तक पहुँच जाएगा।

अब हम देखें कि हमारे विश्व चौधरी संयुक्त राष्ट्र संघ इस बारे में क्या कहते हैं .. उनकी एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया के कई क्षेत्रों में जल की बहुत तंगी है। 2025 तक लगभग 3. 4 अरब लोगों को जलसंकट से जूझना पड़ेगा। 1.8 अरब लोग अब भी प्रदूषित जल पी रहे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार दुनिया में कुल ताजे जल का लगभग 60 प्रतिशत हिस्सा 10 देशों तक ही सीमित है। इससे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि निश्चित ही अगला विश्व युद्ध पानी के लिए ही होगा। यह युद्ध कोई रणभेरी बजाकर नहीं लड़ा जाएगा .. इस युद्ध की शुरुआत हो चुकी है .... हम अपनी जरूरत को पूरी करने के लिए जब दूसरों की चिंता की उपेक्षा करने लगते हैं ... युद्ध की शुरुआत वहीं से हो जाती है .. इसकी कल्पना आप अपने तरीके से कर सकते हैं ...

सवाल यह है कि पानी की इतनी किल्लत होने में क्या केवल जंगलों की कटान और पहाड़ों की खदान का ही हाथ है ... इसके अलावा भी कई कारण हैं जिसे हम अक्सर अनदेखा कर जाते हैं। हर शहर का यदि आप मास्टर प्लान देखें तो उसमें तालाबों के लिए जगह दी जाती है और कुछ पुराने शहरों में तालाब थे लेकिन अब उन तालाबों की जगह इमारतों ने ले ली है। हमें पता भी नहीं कि इस जगह पर कभी तालाब हुआ करता था। चौड़ी सड़कों और शहरों यहाँ तक कि कस्बों और गाँवों में कंक्रीट के बढ़ते प्रयोग के कारण बरसात का पानी जमीन के अंदर नहीं जा पाता और बह जाता है। इस पानी का कोई ट्रीटमेंट प्लान नहीं है। कुदरत की दी हुई इस अमूल्य निधि को हम अनजाने में बर्बाद कर देते हैं।

कुएँ लगभग खत्म ही हो चुके हैं। तालाब कचरा डंपिंग ग्राउंड बन गए हैं और नदियाँ नाले बन गई हैं। रात के अँधेरे में छोटे-छोटे ट्रक इमारती मलबे को भरकर लाते हैं और लैंडफिल साइट्स की जगह झीलों में उड़ेलकर चंपत हो जाते हैं। कोल्ड ड्रिंक्स की शीशे और अल्युमिनियम कैन से लेकर कागज, रबरके टायर, लुब्रीकेंट आयल आदि हर तरह का कचरा झीलों में पटा पड़ा हुआ है। इनसे झीलें सिकुड़ती और प्रदूषित होती जा रही हैं। 1891 में मुम्बई की पवई झील जो कभी पवई गाँव के 2.1 किलोमीटर इलाके में पसरी होती थी आज सिर्फ 550 हेक्टेअर तक में सिमट गई है। यानी जहाँ हमारी जरूरतें बढ़ी हैं वहाँ हम धीरे धीरे अपने स्रोतों को कम करते जा रहे हैं।

हर समस्या का एक समाधान होता है .. हर जोड़ का एक तोड़ होता है ... हम यदि हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहे तो इस समस्या का मुँह सुरसा की तरह बढ़ता चला जाएगा। सरकार के साथ हमें भी अपना योगदान जरूर करना होगा। पूर्व प्रधानमंत्री माननीय अटल बिहारी बाजपेई जी ने नदियों को जोड़ने का सपना देखा था। सरकार को इस कार्यक्रम को तत्काल शुरू कर देना होगा ताकि पानी बेकार न हो और उसे आसानी से दूसरी जगह पहुँचाया जा सके।

शहरों में कचरे को तालाबों और झीलों में फेंकने की बजाए कचरे का प्रोजेक्ट लगाया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त वाटर रिसाइक्लिंग प्लाँट भी लगाया जाना चाहिए ताकि प्रयोग किए जा चुके पानी का पुनः प्रयोग किया जा सके।

*बर्तन धोते समय नल धीमी रफ्तार से चलाने से बहुत पानी बचाया जा सकता है*

पानी की समस्या का एक बड़ा कारण पानी का दुरुपयोग भी है। इसे रोका जाना चाहिए। आपको पता होगा कि महाराष्ट्र में मराठवाड़ा के औरंगाबाद, उसमानाबाद और नांदेड इलाकों में एक साल में 27 करोड़ लीटर शराब का उत्पादन होता है। एक लीटर शराब बनाने में औसतन 4 लीटर पानी लगता है। इस हिसाब से मराठवाड़ा के हिस्से आए पानी में 108 करोड़ लीटर पानी बीयर और शराब के कारखानों में लग जाता है। यही स्थिति पूरे देश के शराब और कोल्डड्रिंक कारखानों में होगी।

इस लेख को लिखने से पहले मैंने अपने एक विचारवान मित्र से पूछा कि आप पानी की समस्या के बारे में क्या सोचते हैं तो उन्होंने बड़ी मासूमियत के साथ कहा कि जब हमारे पास रिजर्व पुलिस है, रिजर्व आर्मी है, रिजर्व ब्लड बैंक है तो पानी भी रिजर्व होना चाहिए। यदि संकल्प, शक्ति, साहस और एकजुटता से कोई काम किया जाए तो कुछ भी असंभव नहीं है। दुबई, मालदीव जैसे कई देशों के पास जल का कोई स्रोत नहीं है। वे समंदर के पानी को रिफाईन करके उसका इस्तेमाल करते हैं तो हम यह काम क्यों नहीं कर सकते। हमारे देश में तो तीन ओर से समंदर की जलनिधि है।

बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि लेय .... जो हो गया उसे वापिस नहीं लाया जा सकता .. लेकिन अब हमें सचेत रहने की जरूरत है। सत्ता और जनता दोनों को मिलकर काम करना होगा। हम जितनी ऊर्जा अनावश्यक कुक्कुर बहसों में अपव्यय कर रहे हैं .. उसे सार्थक सोच के साथ किए जाने वाले कार्यों में व्यय करना होगा। यदि 125 करोड़ लोग एक-एक पेड़ लगाएं तो कुछ सालों में ही भारत में 125 करोड़ पेड़ एक प्रहरी की तरह सूरज की तपिश को रोकने के लिए तैयार हो जाएँगे। यदि हम रोज एक लीटर पानी बचाएँ तो एक दिन में 125 करोड़ लीटर पानी की बचत कर सकेंगे ... यदि बारिश के पहले तालाबों और झीलों की सफाई कर दी जाए तो कितने पानी को हम रोक सकेंगे .... सत्ता को भी चाहिए कि कागजों पर काम करने की बजाए अब जमीन पर काम करें ... यदि लोग बचेंगे .. राज्य बचेगा तभी शासन कर सकेंगे ... इस लेख के माध्यम से मैं अपना अनुभव आपसे शेयर करना चाहता हूं .. हम लोगों की एक छोटी सी संस्था है जो केवल उत्साहित होकर पेड़ लगाने का काम करती है। हम लोग कालोनी के पार्क में पेड़ लगाने का काम करते हैं और उसकी देखरेख के लिए उसी कालोनी के कुछ लोगों को इसकी जिम्मेदारी दे देते हैं ताकि उनका लालन-पालन हो सके। हम लोग उस पेड़ का नाम उनके बच्चों या उनके अजीज लोगों का दे देते हैं ... हमने देखा कि लोग उन पेड़ों को बेहतर तरीके से संभालते हैं ... आप भी अपने आसपास ऐसा ही प्रयास कर सकते हैं .. शायद दुनिया और दुनिया के हम लोग बच जाएँ .....

कृष्ण बिहारी नूर साहेब" का एक शेर है ....

**हर इक पेड़ से साए की आरज़ू न करो,**
**जो धूप में नहीं रहते वो छाँव क्या देंगे।**

- आँचलिक कार्यालय, मुंबई

# पाठकों से निवेदन

बैंक के राजभाषा विभाग द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार एवं प्रोत्साहन हेतु 'पी.एस.बी. राजभाषा अंकुर' पत्रिका का विगत दो दशकों से सफल प्रकाशन किया जा रहा है। इस प्रकाशन में राजभाषा हिंदी के साथ-साथ आर्थिक, सामाजिक, आध्यात्मिक, बैंकिंग, कंप्यूटर एवं मानव-संसाधन से जुड़े लेखों के प्रकाशन के साथ-साथ हास्य-व्यंग्य, कविता, ग़ज़ल का प्रकाशन किया जाता है। स्टाफ़-सदस्यों के बच्चों को प्रेरित करने के लिए उनकी शैक्षिक उपलब्धियां, स्केच, पेंटिंग को भी यथोचित स्थान प्रदान किया जाता है। इसे बहु-आयामी, प्रेरक और प्रोत्साहन माध्यम बनाने के लिए सभी का सहयोग एवं मार्गदर्शन अपेक्षित है। राजभाषा विभाग में आपके मूल लेख, कविता, सुझाव एवं प्रतिक्रियाएं सादर आमंत्रित हैं। कृपया प्रकाशन हेतु लेखन सामग्री hindipatrika@psb.co.in पर भेजें।

मुख्य संपादक
**पी.एस.बी. राजभाषा अंकुर**
पंजाब एण्ड सिंध बैंक, प्र.का. राजभाषा विभाग
21, राजेन्द्र प्लेस, नई दिल्ली-110008

*रसोई में हाथ, सब्जियाँ आदि धोते समय पतीला नीचे रख लें। उस पानी से घर की क्यारियों में पानी दिया जा सकता है।*

# सौर ऊर्जा का उपयोग

अमित नागर

### भूमिका :

सोलर एनर्जी ऊर्जा का वह स्रोत है जो सूर्य से प्राप्त होता है। सूर्य जो पृथ्वी से लाखों मील दूर है, सतत् रूप से अपनी ऊर्जा पृथ्वी को उपलब्ध कराता है, यह ऊर्जा का स्वाभाविक रूप से पुनः पैदा होने वाला स्रोत है।

वर्तमान समय में बहुत से देश सोलर एनर्जी को व्यापक रूप से उपयोग में ला रहे हैं। भारत भी इस दिशा में अग्रसर है तथा ऊर्जा के इस स्वाभाविक पुनः पैदा होने वाले स्रोत को उपयोग में लाने हेतु विभिन्न परियोजनाएं बना रहा है।

### परिप्रेक्ष्य :

सोलर एनर्जी का उपयोग मनुष्य आदिकाल से ही करता आया है। ज्ञात स्रोतों के अनुसार 7वीं सदी पूर्व मानव सूर्य के प्रकाश के प्रयोग से अग्नि प्रज्वलित करता था। 8वीं सदी पूर्व ग्रीक व रोम के लोग सूर्य ऊर्जा के प्रयोग से उत्सवों पर (धार्मिक) प्रकाश उत्पन्न करते थे। भारत वर्ष में भी लोग आदिकाल से सूर्य को उसके विभिन्न लाभकारी गुणों के कारण पवित्र व पूजनीय मानते आए हैं तथा उसके गुणों को अपने उपयोग में लाते आए हैं।

### मुख्य अवधारणा :

वर्तमान समय में सोलर एनर्जी का प्रयोग उद्योग, कल-कारखानों, मशीनी उपकरण तथा आवासीय प्रयोग में समुचित प्रकार से किया जा रहा है तथा इस दिशा में सतत् प्रयास जारी है।

आवास में सोलर एनर्जी का प्रयोग निम्न प्रकार से उपयोगी है:

1. **आवासीय ऊर्जा :** आवासीय ऊर्जा का अभिप्राय उस ऊर्जा से है जिसे हम घरेलू उपयोग में लाते हैं जैसे बल्ब, पंखा, ट्यूब लाईट, इत्यादि। उक्त सभी ऊर्जा उपकरण सोलर ऊर्जा के माध्यम से चलाए जा सकते हैं। इस हेतु सोलर उपकरण के द्वारा सूर्य की ऊर्जा को संचित किया जा सकता है।
2. **घरेलू गर्म पानी :** वर्तमान समय में ऐसे बहुत से उपकरण बाज़ार में उपलब्ध हैं जो सूर्य की ऊर्जा के माध्यम से पानी को गर्म करते हैं, इससे बिजली की बचत की जा सकती है।
3. **घरेलू गर्म हीटर :** सर्दियों में सूर्य की ऊर्जा को संचित कर हीटर चालू किए जा सकते हैं, भारत में यह सुविधा कुछ जगहों पर उपयोग में लाई जा रही है। इस दिशा में इजराइल ने उल्लेखनीय कार्य किया है।
4. **सोलर कुकर :** सोलर कुकर राजस्थान, गुजरात में उपयोग में लाया जा रहा है, सोलर कुकर के माध्यम से बिना किसी व्यय और असुविधा के अच्छा खाना बनाया जा सकता है।
5. **सोलर वृक्ष :** यह प्रौद्योगिकी हालांकि, भारत में उपयोग नहीं लाई गई है, परन्तु

*कपड़े धोते समय बचे पानी का फ्लश में प्रयोग किया जा सकता है।*

इजराइल में ई-वृक्ष के माध्यम से घरों व व्यवसायिक स्तर पर छाया उपलब्ध करायी जा रही है, जिससे व्यक्ति गर्मी में इसके नीचे बैठ सके।

6. **सोलर लैम्प :** आदिवासियों व पहाड़ी इलाकों में सोलर लैम्प लाईट का वैकल्पिक व आवश्यक साधन हो गया है। आज भी भारत में कुछ ग्रामीण व आदिवासी क्षेत्रों में बिजली नहीं पहुँच पाई है इस दिशा में सोलर लैंप का उपयोग लाभकारी व मितव्ययी है।

सरकार इन क्षेत्रों में समुचित अनुदान के माध्यम से यह लैम्प उपलब्ध करा रही है तथा ग्रामीण व आदिवासी लोग रात में इन सोलर लैम्पों के माध्यम से रोशनी प्राप्त करते हैं।

### सोलर एनर्जी के आवासीय उपयोग पर वर्तमान परिदृश्य :

भारत सरकार सोलर एनर्जी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु विभिन्न योजनाओं के माध्यम से आवासीय उपभोगताओं को प्रोत्साहित कर रही है, उन्हें इस उपकरण को लगाने हेतु ऋण तथा उस पर अनुदान भी दिया जा रहा है। एनर्जी को बढ़ावा देने हेतु ऋण उपलब्ध कराने को कहा गया है।

- राष्ट्रीय सोलर आयोग का गठन किया गया है जो सोलर ऊर्जा के उपयोग को प्रोत्साहित तथा प्रायोगिक करेगा। यह आयोग इस दिशा में कार्य करेगा कि कैसे ऊर्जा के इस स्त्रोत को अधिक से अधिक लोगों के उपयोग हेतु उपलब्ध कराया जा सके तथा इस दिशा में आगे बढ़ने हेतु यथा संभव कदम उठाए जाएं।

### सोलर एनर्जी के आवासीय उपयोग के लाभ :

सोलर ऊर्जा से निम्न लाभ हैं :

1. सोलर ऊर्जा पूर्णतया निःशुल्क उपलब्ध है तथा इसकी कोई कमी नहीं है।

2. सोलर ऊर्जा का कोई दुष्परिणाम नहीं है यह किसी भी तरीके से आवासीय उपयोग हेतु हानिकारक नहीं है।

3. सोलर ऊर्जा किसी भी प्रकार के प्रदूषण से मुक्त है।

4. सोलर ऊर्जा के माध्यम से बिजली के शुल्क से राहत मिलती है।

5. सोलर एनर्जी के माध्यम से खाना बनाया जा सकता है।

राष्ट्रीय आवास बैंक ने सोलर हीटर तथा सोलर लाईट के आवासीय उपकरण हेतु 30 से 40 प्रतिशत तक अनुदान राशि हेतु घोषणा भी की है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि आवासीय उपयोग हेतु सोलर ऊर्जा उपयोगी तथा मितव्ययी है तथा सरकार तथा बैंक इसे प्रोत्साहित करने हेतु अग्रसर हैं।

### सोलर ऊर्जा के नकारात्मक तथ्य :

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि हर पक्ष का सकारात्मक व नकारात्मक पक्ष होता है। सोलर ऊर्जा के आवासीय उपयोग के कुछ ऐसे तथ्य हैं जो इसके नकारात्मक पक्ष को उजागर करते हैं :

1. आवासीय उपयोग में लाने हेतु सोलर उपकरण स्थापित करना आवश्यक है। परन्तु यह उपकरण काफी खर्चीले हैं तथा आम आदमी की पहुँच से बाहर हैं यद्यपि बैंक अनुदान प्रदान करते हैं परंतु प्रक्रिया तथा अनुदान पर्याप्त नहीं है।

2. सोलर उपकरण को स्थापित करने हेतु खुली छत अथवा स्थान की आवश्यकता होती है परंतु यह सुविधा सभी व्यक्तियों के पास उपलब्ध नहीं होती है।

*कागज़ की दोनों साइड्स इस्तेमाल करें।*

3. सोलर ऊर्जा के उपयोग की तकनीक अभी काफी जटिल व खर्चीली हैं, इस दिशा में सुधार व अनुसंधान की आवश्यकता है।

4. जागृति तथा जानकारी के अभाव के कारण सोलर ऊर्जा के आवासीय उपयोग हेतु अभी भी कमी है। भारत में अभी भी इस दिशा में काफी कार्य होना बाकी है। हमें इस दिशा में इजराइल से सीखने की जरूरत है जहाँ सोलर ऊर्जा का आवासीय व व्यवसायिक उपयोग समुचित मात्रा में किया जा रहा है।

5. प्राकृतिक व जलवायु कारणों से सोलर ऊर्जा भारत के कुछ ही भागों में पूर्ण रूप से उपयोग में लाई जा सकती है। जहाँ मौसम साफ रहे तथा सूर्य की समुचित रोशनी मिले।

### सुझाव :

यह पूर्ण रूप से सत्य है कि ऊर्जा के पारम्परिक स्रोत जैसे तेल, गैस, कोयला तथा काष्ठ एक सीमित समय के लिये ही उपलब्ध हैं जिस तरह से हम इन्हें उपयोग में ले रहे हैं तो वो दिन दूर नहीं जब यह स्रोत पूर्ण रूप से समाप्त जाएंगे। इस दिशा में स्वाभाविक रूप से पुनः पैदा होने वाला ऊर्जा का स्रोत अवश्यम्भावी व अति आवश्यक है। सोलर ऊर्जा इस दिशा में अच्छा तथा सुलभ स्रोत हैं। भारत सरकार ने भी इसे महसूस करते हुए राष्ट्रीय सोलर मिशन की नींव रखीं है जो इस दिशा में अनुसंधान व प्रयोग करेगा कि कैसे सोलर ऊर्जा को अधिक उपयोगी तथा प्रायोगिक बनाया जा सके।

राष्ट्रीय आवास बैंक भी अपनी योजनाओं के माध्यम से सोलर ऊर्जा के आवासीय उपयोग को बढ़ावा दे रहा है परन्तु इस दिशा में निम्न उपाय अति आवश्यक हैं।

1. **जागरूकता :** सोलर ऊर्जा के उपयोग व प्रयोग को बढ़ाने हेतु लोगों को इसके फायदे बताने होंगे जिससे लोग इसके उपयोग में रुचि लें।

2. **आर्थिक सहायता :** वर्तमान समय में सोलर उपकरण काफी महंगे हैं। यद्यपि सरकार इसके लिए ऋण उपलब्ध करा रही है परंतु ऋण लेना या उस पर अनुदान मिलना, एक लम्बी व कठिन प्रक्रिया है। यदि सरकार एल.ई.डी. लाईटों की तरह सोलर उपकरण भी किफायती दामों पर उपलब्ध कराए तो इसमें मदद मिल सकती है।

3. **तकनीक :** सोलर तकनीक में सुधार व सरलता की आवश्यकता है ताकि ग्रामीण व्यक्ति भी अपने आवास पर सोलर ऊर्जा का उपयोग कर सके।

### सारांश :

सौर ऊर्जा का उपयोग मनुष्य आदिकाल से ही अपने आवासीय उपयोग हेतु करता आ रहा है, इस दिशा में निरंतर सुधार हुआ है तथा वर्तमान में मनुष्य सौर ऊर्जा को आवासीय, व्यावसायिक तथा सामाजिक उपयोग में काम ले रहा है। सौर ऊर्जा स्वाभाविक व पुनः उत्पन्न होने वाली ऊर्जा है तथा यह पर्यावरण को किसी भी तरह से नुकसान नहीं करती है और साथ ही साथ ऊर्जा के अन्य पारम्परिक व काम में लिये जा रहे स्रोतों पर हमारी निर्भरता को काफी हद तक कम व नियंत्रित करती है। वर्तमान समय की आवश्यकता है कि हम सौर ऊर्जा के उपयोग को अधिक से अधिक प्रोत्साहित करें तथा साथ ही इसे लोगों तक सुलभता से उपलब्ध कराएं। राष्ट्रीय सौर मिशन को इस दिशा में अनुसंधान व प्रयोग करने चाहिए तथा इज़राइल व अन्य देशों में प्रयुक्त उचित तकनीक को अपनाना चाहिए ताकि हम भी सौर ऊर्जा को अपने आवासीय उपयोग हेतु पूर्ण रूप से काम में ले सकें।

- प्रधान कार्यालय, जोखिम प्रबंधन विभाग

*कार को पाइप से न धो कर गीले कपड़े से साफ करने पर पानी की पर्याप्त बचत होती है।*

# उद्घाटन

बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, श्री जतिन्दरबीर सिंह (आई.ए.एस) सैक्टर–63 नोएडा शाखा का उद्घाटन करते हुए। उनके साथ कार्यकारी निदेशक श्री मुकेश जैन, कार्यकारी निदेशक श्री ए. के. जैन महाप्रबंधक श्री सुभाष क्वात्रा, महाप्रबंधक श्री दीन दयाल शर्मा व बैंक के अन्य उच्चाधिकारी भी दिखाई दे रहे हैं।

भोपाल अंचल के आंचलिक प्रबंधक श्री दलजीत सिंह ग्रोवर, रतलाम शाखा के नए परिसर का उद्घाटन करते हुए।

# प्रकृति का मशीनीकरण : वैश्विक चिंता

-: भारती :-

ग्लोबल वार्मिंग एवं जलवायु परिवर्तन वैश्विक स्तर पर चिंता का विषय बना हुआ है। हम जलवायु परिवर्तन का सामना करने के लिए तैयार नहीं हैं। संपूर्ण वैश्विक समाज भविष्य में आने वाली प्राकृतिक आपदाओं के प्रति चिंतित है। क्या होगा यदि पृथ्वी का तापमान इसी तरह से बढ़ता चला गया? वो समय दूर नहीं, जब सभी जीव-जंतु, वनस्पति तथा अन्य प्राकृतिक संपदाएं नष्ट हो जाएंगी। पृथ्वी प्रकृतिविहीन हो जाएगी। पृथ्वी पर जीवन समाप्त होने की कगार पर पहुंच गया है लेकिन मनुष्य है कि समझना ही नहीं चाहता। हम घर की चारदीवारी में बैठकर चर्चा करते हैं, विचार विमर्श करते हैं, दो चार रैलियां निकाल लेते हैं और बस! बैठ जाते हैं संतुष्ट होकर। वास्तविकता तो यह है कि हम सभी से कुछ हो ही नहीं पाया। आज स्थिति यह है कि पृथ्वी खत्म होने की कगार पर आ गई है।

> मौसम का संतुलन बिगड़ रहा है, जिसके लिए मनुष्य स्वयं जिम्मेदार है। हम सभी जानते हैं कि हमें इसके भीषण परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं और हम भुगत भी रहे हैं लेकिन मनुष्य है कि कुछ समझना ही नहीं चाह रहा है। हम सभी अपने स्वार्थ में अंधे हो चुके हैं। हम आँख मूंद कर सोए हुए हैं।

इसी संकट से जुड़ा मुद्दा प्रदूषण भी है जोकि मानव निर्मित ही कहा जाएगा। इस प्रदूषण ने पृथ्वी की खूबसूरती को इस कदर नुकसान पहुंचाया है कि इसका गहरा नीला और हरा रंग काले में परिवर्तित होने लगा है। प्रदूषण का स्तर बढ़ता ही जा रहा है। कुछ ऐसी ही चिंता दिल्ली की भी है जोकि देश की राजधानी, देश का दिल भी कही जाती है। देश में होने वाली सभी घटनाओं का गढ़ है ये दिल्ली। राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक गतिविधियों का आरंभ यहीं से होता है लेकिन आज स्थिति यह है कि दिल्ली प्रदूषण का घर बन गई है। समय के साथ मनुष्य की सोच में परिवर्तन आया है। एक समय ऐसा था जब लोग दिल्ली में रहने के लिए उत्साहित हुआ करते थे और आज आलम यह है कि वर्षों से दिल्ली में रह रहे लोग यहां से बाहर निकलना चाहते हैं। यहां की हवा में दम घुटता है। बचपन में गौरेया चिड़िया अपनी चह-चहाहट से हमें जगाया करती थीं और आज खूबसूरत गौरेया राजधानी से गायब हो रही है। हमारी राजधानी को यदि प्रदूषण के जहर से नहीं बचाया गया तो यहां रहना दूभर हो जाएगा। आधुनिकता और मशीनीकरण के इस युग ने कहने को तो हमें बहुत कुछ दिया है। हमें कई सुविधाएं प्रदान की, हमारा जीवन सरल बना दिया लेकिन प्रकृति से छेड़-छाड़ करते हुए हम कब तक यह जीवन जी पाएंगे? क्या हम सही में पूर्ण मशीनी युग में जी सकते हैं? क्या हम प्रकृति के बिना जीवन की कल्पना कर सकते हैं? बचपन में हम कई ऐसे कार्टून देखा करते थे जो पूरी तरह कल्पना आधारित होते हैं जहाँ कुछ भी संभव है, वहाँ इसी प्रकार के मशीनी युग को दिखाया जाता था। जिसे हम सभी खूब खुश हुआ करते थे और एंजॉय किया करते थे। लेकिन सत्य तो यह है कि अब हम यथार्थ में जी रहे हैं। जहाँ पूरी तरह मशीनों पर निर्भर नहीं रहा जा सकता। मनुष्य का निर्माण इसी प्रकृति की गोद से हुआ। जिस प्रक्रिया से हम सभी वाकिफ़ है, किताबों में हम पृथ्वी एवं मनुष्य की संरचना के बारे में पढ़ चुके हैं। देखा जाए तो सभी जीवन प्रकृति की ही संतान हैं। इसके बिना जीवन की कल्पना करना असंभव है।

मौसम का परिवर्तित होना प्रकृति का नियम है लेकिन आज हम इस नियम को ही परिवर्तित करने में जुटे है। गर्मियों के दिन बढ़ते जा रहे हैं। गर्मियों का तापमान लगभग 50 डिग्री सेल्सियस तक पहुँचता है जिस कारण हम भीषण गर्मी का सामना कर भी रहे हैं। बारिश की मात्रा कम होती जा रही है जिसका असर खेती पर भी पड़ रहा है और सूखा जैसी स्थिति उत्पन्न हो रही है। प्रदूषण के कारण

*पानी अमूल्य है, संभल कर खर्च कीजिए।*

कई स्थानों पर अम्लीय वर्षा हो रही है। सर्दियों के दिन घटते जा रहे हैं। हम केवल अपने बारे में सोच रहे हैं और भविष्य की मानो हमें कोई चिंता ही नहीं।

आज पृथ्वी बीमारियों का गढ़ बनती जा रही है। प्रदूषित हवा में साँस लेना भी दूभर होता जा रहा है। छोटी उम्र में ही कई सारी बीमारियां मनुष्य को घेर रही हैं। ये प्रदूषित वायु शरीर के अंदर ही नहीं अपितु बाहर भी चोट करती है। प्रदूषित वायु साँस के ज़रिए शरीर में प्रवेश करती है जिसके कारण फेफड़ों (लंग्स) का इंफेक्शन, अस्थमा, साँस लेने में दिक्कत, दिल की बीमारी, ब्रेन स्ट्रोक जैसी बीमारियाँ तो होती ही हैं, साथ में आँखों में जलन, स्किन, एलर्जी, इम्यून सिस्टम में गड़बड़ी, बालों का झड़ना जैसी समस्याएं भी उत्पन्न होती हैं। जिनका वर्णन इस प्रकार है :

**श्वसन संबंधी रोग (रेस्पिरेटरी सिस्टम का बिगड़ना) :** हर दिन प्रदूषण साँस के जरिए शरीर के अंदर प्रवेश कर रहा है। प्रदूषित कण छोटे होने के कारण नाक के जरिए साँस की नली तक पहुँचते हैं और साँस लेने में परेशानी पैदा करते हैं।

**दमा (अस्थमा) :** प्रदूषण का स्तर बढ़ने से नाक बंद हो जाती है। जिस कारण खुले मुँह से साँस लेनी पड़ती है। जहां पर ज़ुकाम होने की संभावना थी वहां ब्रोंकाइटिस, अस्थमा, इंफेक्शन की बीमारी हो जाती है।

**फेफड़ों के रोग (लंग्स इंफेक्शन) :** एक वर्गीय एरिया में पीएम कण 10 माइक्रोग्राम तक बढ़ जाएं तो लंग इंफेक्शन का खतरा 15-20 प्रतिशत तक बढ़ जाता है। यदि आकार 2. 5 पीपीएम से कम हो तो वह सीधे रेस्पिरेटरी सिस्टम में पहुँच जाता है जिस कारण लंग्स को नुकसान पहुँचता है।

**ब्लड कैंसर :** प्रदूषण में बेंजीन की वजह से कैंसर के साथ-साथ प्लास्टिक एनीमिया यानी ब्लड कैंसर का खतर रहता है। बेंजीन, ब्लड सेल्स पर असर डालती है और इसकी वजह से ब्लड कैंसर होने का खतरा रहता है।

**फेफड़ों का कैंसर :** हवा में घुले सल्फर, कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन, बेंजीन, बेंजोफाइरीन और अन्य पार्टिकुलेट कणों की वजह से यहां लंग कैंसर का खतरा बढ़ गया है। ये साँस के ज़रिए लंग्स में पहुँच कर उन्हें खराब कर रहे हैं।

**गले में सूजन :** प्रदूषण के कण की वजह से फॉरिंग्स, लॉरिंग्स, ब्रोकंस लेफ्ट और राइट, ट्रैकिय, लंग्स में जब सूजन होती है, तो इससे खांसी की शुरुआत होती है तथा गले में सूजन पैदा होती है।

**नाक और गला खराब होना :** छोटे कण साँस की नली में पहुँच जाएं, तो इससे नाक लाल होने के साथ सूजन आती है। खुजली और गले में खराश के साथ ज़ुकाम हो जाता है।?

**आँखों की एलर्जी :** आँख में खुजली और जलन होने लगती है। कई बार प्रदूषण के कारण से होने वाला इंफेक्शन एक से दूसरे व्यक्ति को भी हो जाता है।

**बाल और स्किन एलर्जी :** प्रदूषित हवा में मौजूद कण बालों को कमज़ोर बनाते हैं। स्किन की बीमारी की संभावनाएं भी बढ़ जाती है।

**इम्यून सिस्टम :** डॉक्टरों का मानना है कि प्रदूषण की वजह से बॉडी के इम्यून सिस्टम पर भी असर पड़ता है। इस कारण से दवा का असर कम होता है और इंफेक्शन की संभावना अधिक हो जाती है।

**ब्रेन स्ट्रोक :** प्रदूषण के बुरे प्रभाव से हमारा दिमाग भी नहीं बच पाया है। हवा में कार्बन मोनोऑक्साइड ज्यादा होता है, जिसका असर दिमाग पर पड़ता है। बीपी के मरीज़ को ब्रेन स्ट्रोक का खतरा ज्यादा होता है।

हम कहते हैं कि हमने विकास किया। मानव सभ्यता, मानव समाज, मानव संस्कृति का विकास हुआ है। विभिन्न सभ्यताओं और संस्कृति के विकास के साथ आज हम विभिन्न युगों से गुजर कर आधुनिक या यूँ कहें कि हमने मशीनी युग में प्रवेश किया है। वहां सभ्यताओं का विकास प्रकृति के अनुरूप हुआ है। प्राचीन सभ्यताओं ने स्वयं को प्रकृति के अनुसार ढाला और प्रकृति को पूजनीय बनाया। प्राकृतिक संपदा चाहे वे नदी, पहाड़, वृक्ष हों इन्होंने इसे देवी-देवताओं का दर्जा प्रदान किया। जोकि हिंदू संस्कृति में आज भी मान्य है। प्रकृति ही उनके सभी स्रोतों की पूर्ति करती थी, प्रकृति उनकी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा करती थी जो आज भी कर ही रही है। वे प्रकृति की रक्षा

करते थे। जिसके साक्ष्य हमारे सामने आज भी प्रस्तुत हैं। आधुनिक समाज में भी कई ऐसी जातियां हैं जो प्रकृति को बचाने में लगी हैं चाहे वह 1974 के चिपको आंदोलन के रूप में हो अथवा काले हिरण को बचाने को लेकर राजस्थान के आदिवासी क्षेत्र में किया गया आंदोलन हो। इसके अतिरिक्त विश्व में कई ऐसे प्रकृति प्रेमी हैं जिन्होंने प्रकृति को बचाने के लिए मुहिम छेड़ी हुई है। किंतु आज स्थिति यह है कि हम प्रकृति को अपना गुलाम बनाने पर तुले हैं। हमारा प्रयास यही रहता है कि हम प्रकृति को अपने अनुरूप ढाल लें। जिसके भयंकर परिणाम हमें आपदाओं के रूप में भुगतने भी पड़ते हैं लेकिन मनुष्य है कि इन सब से कोई सबक ही नहीं लेना चाहता। "कैलिफोर्निया" के एक चिड़ियाघर में कोको नाम की मादा गोरिल्ला है जिसकी उम्र 45 वर्ष की है। वह बचपन से ही साइन भाषा सीख रही है। इस गोरिल्ला ने इसांनों से धरती बचाने का संवेदनशील संदेश जारी किया है। हालांकि यह संदेश उसने इशारे में दिया, जिसकी स्क्रिप्ट फ्रांस के एनजीओ 'एनआई कंजर्वेशन' ने तैयार की है। यानि उसके संदेश को एनजीओ ने स्क्रिप्ट में बदल दिया है। वह संदेश है : "इंसान इतना बड़ा बेवकूफ है कि खुद ही इस धरती को नुकसान पहुंचा रहा है। वह कहती है कि मैं गोरिल्ला हूं... मैं फूल हूं.... जानवर हूं.... मैं नेचर हूं.... मैं इंसान को प्यार करती हूं। धरती को प्यार करती हूं, लेकिन इंसान तो बेवकूफ है। कोको सॉरी, कोको क्राई।" धरती की परेशानी समझो! समस्या का समाधान करो। धरती को बचाओ कुदरत देख रही है।" (नवभारत टाइम्स एवं यूट्यूब)

यह एक कड़वा सत्य है मनुष्य केवल अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए पृथ्वी का अंधाधुंध दोहन कर रहा है जिसके बुरे परिणाम प्रकृति और मनुष्य दोनों को झेलने पड़ रहे हैं। हम यह भूल गए हैं कि इस पृथ्वी पर केवल मनुष्य का एकाधिकार नहीं है। यह पृथ्वी, इसके संसाधन जितने हमारे हैं उतने ही पशु पक्षियों, पेड़-पौधों, झरने, तालाब और यहां तक कि छोटे-छोटे सूक्ष्म जीवों का भी इस पर उतना ही अधिकार है। हम अपने स्वार्थों के कारण इतने अंधे हो गए हैं कि हमने प्रकृति की सीमाओं को तोड़ना प्रारंभ कर दिया है। हम बात करते हैं प्राइवेसी की। स्वयं की प्राइवेसी की और यदि कोई हमारी प्राइवेसी को तोड़ता है तो हम तमतमा उठते हैं। तब हम अन्य जीव-जंतुओं की प्राइवेसी को क्यों तोड़ रहे हैं? क्या उन्हें गुस्सा नहीं आता? जी नहीं? गुस्सा आता है। जो कि आपदाओं के रूप में फूट पड़ता है। आए दिन हम हजारों-लाखों लोग के समुद्री तूफानों, बाढ़, सूखा, भूस्खलन की चपेट आने जैसी घटनाओं के बारे में सुनते हैं। हमने पशुओं के घर उनके छीने तो वे जंगलों के बाहर आ गए। कभी कोई तेंदुआ किसी को अपने गुस्से का शिकार बनाता है, तो कभी कोई हाथी सड़क पर किसी को अपने पैरों तले कुचल देता है। इस तरह की घटनाएं आम होती जा रही है। जर, जमीन, जंगल सब नष्ट होने लगे हैं। सौ मंजिला इमारतों का बोझ पृथ्वी के लिए असहनीय बनता जा रहा है। वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी के प्रकोप के आगे मनुष्य की एक न चलेगी।

यह लेख केवल चिंताएं प्रकट नहीं करता बल्कि इसलिए लिखा गया ताकि हम सभी सजग हो जाएं। तभी हम पृथ्वी को, और सही मायनों में स्वयं को इस संकट से बचा पाएंगे। समाज का जागरूक होना बेहद ज़रूरी है। हमें सतत पोषणीय विकास का मार्ग अख्तियार करना ही होगा, जहाँ प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग इस प्रकार किया जाए ताकि भावी पीढ़ी भी उन संसाधनों का प्रयोग कर सके और उन्हें भी पृथ्वी का वही रूप मिले जिस रूप में पृथ्वी हमें मिली है। मीडिया एवं जनसंचार एक सशक्त माध्यम है जिससे समाज में जागरूकता फैलायी जा सकती है। टीवी पर आने वाले सामान्य विज्ञापनों ने ऐसी ही मुहिम छेड़ी है। अक्सर एक विज्ञापन आता है जिसमें छोटे-छोटे बच्चे बिजली को बचाने की शपथ लेते हैं और अपने बड़ों को बिजली बचाने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इसके अतिरिक्त नुक्कड़ नाटक भी ऐसे सामाजिक संदेश पहुंचाने का अच्छा माध्यम साबित होगा। ये सही है कि हम इस संबंध में संभाषण, विचार-विमर्श आदि करें लेकिन वहां जो भी समाधान खोजे जाएं, उन्हें व्यावहारिक रूप प्रदान कर लागू किया जाना आवश्यक है।

प्र.का. मुद्रण एवं लेखन सामग्री

पेड़-पौधे लगाएं

# राजभाषा अंकुर का विमोचन

वित्त मंत्रालय वित्तीय सेवाएं विभाग के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) डॉ. वेद प्रकाश दुबे, बैंक की हिंदी पत्रिका 'राजभाषा अंकुर' के नवीनतम अंक का विमोचन करते हुए। उनके दाएं हैं श्री राजिंदर सिंह बेवली, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), श्री राजू दास, आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी (बाएं से तीसरे), श्री सनोज कुमार, नामित राजभाषा अधिकारी (गुवाहाटी), श्री सोरंगम हॉगंडे, अधिकारी आं.का. गुवाहाटी व अन्य बैंकों के उच्चाधिकारीगण।

हिंदी पत्रिका 'अंकुर' में प्रादेशक भाषाओं की रचनाओं को (उनके हिंदी रूप सहित) प्रकाशित करने पर वित्तीय सेवाएं विभाग की गुवाहाटी बैठक में बैंक की प्रशंसा की गई। पत्रिका में संथाली भाषा में प्रकाशित रचना को प्रदर्शित करते वित्तीय सेवाएं विभाग के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) डॉ. वेद प्रकाश दुबे। चित्र में गुवाहाटी के आंचलिक प्रबंधक श्री राजू दास तथा प्रधान कार्यालय के मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह बेवली भी दृष्यमान हैं।

पत्रिका के पिछले कवर पर छपे पर्यावरण संबंधी चित्र को भी प्रदर्शित किया गया।

राजभाषा अधिकारी सम्मेलन की सीडी का विमोचन करते वित्तीय सेवाएं विभाग के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) डॉ. वेद प्रकाश दुबे। उनके साथ खड़े हैं मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह बेवली तथा अन्य बैंकों के उच्चाधिकारी।

# 20वां अखिल भारतीय

दिनांक 11 व 12 फरवरी
राजभाषा विभाग द्वारा अखिल
का आयोजन किया गया जिसमें देश भर
ने सहभागिता की। सम्मेलन के मुख्य
(राजभाषा) डॉ. वेद प्रकाश दूबे। सम्मेलन की
द्वारा की गई। सम्मेलन में डॉ. दूबे ने सभी राजभाषा
उन्हें अपने काम निडरता से करने का आव्हान किया। इस
श्री राजिंदर सिंह वेवली, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री कँवर
सहभागयों को हिंदी में काम करने के प्रति प्रेरित किया और
सदस्य श्री चंदर वर्मा ने गीतकार साहिर लुधियानवी पर एक
निदेशक द्वारा डॉ. दूबे को सह पुस्तक सप्रेम भेंट की गई।
को भेंट की। इस अवसर पर डॉ. दूबे ने राजभाषा विभाग द्वारा
हमारे बैंक के लखनऊ कार्यालय द्वारा लखनऊ नराकास की पत्रिका
भी किया गया।

# राजभाषा अधिकारी सम्मेलन

2016 को प्रधान कार्यालय
भारतीय राजभाषा अधिकारी सम्मेलन
से बैंक के सभी राजभाषा अधिकारियों
अतिथि थे वित्तीय सेवाएं विभाग के संयुक्त निदेशक
अध्यक्षता निब्सकॉम के निदेशक श्री रजनीश कटारिया
अधिकारियों को उनके दायित्वों से परिचित करवाते हुए
अवसर पर प्रधान कार्यालय के मख्यह प्रबंधक (राजभाषा)
अशोक तथा वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री राजीव राय ने भी
उनके द्वारा किए जा रहे कार्यों की समीक्षा की। निब्सकॉम के स्टाफ
पुस्तक लिखी है 'मैं साहिर हूँ'। श्री वर्मा की मौजूदगी में निब्सकॉम के
डॉ. दूबे ने भी अपनी पुस्तक 'वन अपना जीवन' निदेशक श्री कटारिया
सम्मेनलन के लिए बनाई गई 'कार्यालय सहायिका' का विमोचन किया।
प्रकाशित किए जाने की सराहना की गई और इस पत्रिका को प्रदर्शित

असमिया कहानी

अजित कुमार दत्ता

# কাউন্টাৰ

অজিত কুমাৰ দত্ত

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

शाखा-डिब्रूगढ़, आसाम

असमिया कहानी की अनुवाद

# काउंटर

-: अजित कुमार दत्ता :-

सर मुझे पहचाना? एक सिर मुंडन किए हुए सबल सुंदर से युवक ने मुझसे यह सवाल पूछा। उस समय काउंटर पर बहुत भीड़ थी। मेरे सेवानिवृत्त होने में दो साल बाकी रह गए हैं। इस लम्बे सफर में, मैं बहुत लोगों से मिला हूँ। मैंने दिमाग पर जोर दिया कि ये सज्जन कौन हैं। और मैंने इन्हें कहाँ देखा है?

काउंटर पर दैनिक लेन - देन से लेकर खाता खोलना पासबुक छापना आदि कामों के लिए बहुत से लोग आते रहते हैं, मैं उन लोगों की काफी मदद भी करता रहता हूँ । उन लोगों के चेहरे पर संतोष देख कर मुझे प्रसनन्ता भी होती है। वरिष्ठ ग्राहक मुझे खुश होकर आशीर्वाद देते हैं। कुछ समय पहले नजदीक के गाँव से एक दादी जी आई थीं । उनके बड़े पुत्र का निधन सड़क दुर्घटना में हो गया था। वह एक वाहन चालक था ।

सरकार द्वारा मिली आर्थिक सहायता का चेक लेकर वह आई थीं और मैंने उनका कार्य जल्दी से कर दिया था। इस कारण वे मुझे दो सौ रुपए गुप्त रूप से देना चाहती थीं। पर ऐसे पैसे लेना न तो मुझे अच्छा लगता है और न ही ऐसी मेरी आदत है। मैंने उन्हें कहा कि इस कार्य के लिए ही मुझे वेतन मिलता है और इस तरह पैसे ले कर मेरे आत्मसम्मान को ठेस पहुंचती है।

उनके साथ आया हुआ एक छोटा लड़का बोला कि इन दिनों कार्यालयों में पैसा देकर कार्य कराते हुए दादी इसकी आदि हो गयी हैं । काउंटर के अंदर बैठने वाले भूल जाते हैं कि उनको भी कभी काउंटर के बाहर खड़ा होना पड़ सकता है। सर मुझे पहचाना क्या? उस युवक की आवाज ने मुझे चौंका दिया मैंने मुस्कुराते हुए न पहचानने का संकेत दिया। तभी उसकी बातें सुनने के बाद मुझे अचानक याद आया कि पास की दुकान में कार्य करने वाले एक आदमी के साथ वह यहाँ पैसा जमा करने आया था। एक दिन उसने मुझ से पूछा था कि क्या मेरा भी खाता खुल सकता है? उसकी इस रुचि को देख कर मैंने कहा 'हाँ' तुम्हारा भी खाता खुल सकता है। फिर मैंने उसका बचत एवं आवर्ती जमा खाता खोल दिया था। वह अपने घर, पिता के श्राद्ध में आया हुआ था तो सोचा कि उस बचत खाते को बंद कर दिया जाए। पता नहीं वापस कब आना होगा। उसकी बातें सुनकर मैंने उसके खाते की जाँच की तो मैंने पाया की उसके खाते में 3.00 लाख रुपए की राशि पड़ी है। मैं उसके निर्देश का इंतजार कर रहा था, पर उसने कुछ नहीं कहा। मैंने फिर उससे पूछा, वह थोड़ी देर चुप रहा और बोला सर मैं आपको कुछ राशि 50.00 पचास हज़ार उपहार स्वरूप देना चाहता हूँ । उसकी बात सुनकर मैं चौंक गया। मेरी धड़कन थोड़ी देर के लिए रुक सी गई। थोड़ी देर की शांति के बाद मैंने कहा कि इससे अच्छा होगा कि तुम इस राशि में कुछ और पैसे जोड़कर अनाथ आश्रम के लिए कम्बल खरीद लो, अभी ठंड भी आ रही है । उनमें ये बाँट देना। इससे तुम्हारे पिताजी की आत्मा को शांति मिलेगी। यह सुनकर वह थोड़ी देर अपना सिर झुका कर खड़ा रहा और फिर मुझे अपने काउंटर से बाहर आने का आग्रह किया। काउंटर पर भीड़ कम होने के कारण मैं बाहर आ गया और उसने झुककर मेरे पैरों को छुआ। फिर बोला 'आपकी ईमानदारी से मैं काफी प्रेरित हुआ हूँ और आपको नमन करता हूँ'........ इतना कह कर वह वहाँ से चला गया.... चुपचाप।

वह असम वैली स्कूल में पढ़ता था और जब भी गर्मियों की छुट्टियों में घर जाता था, अपनी पासबुक को अपडेट करवाया करता था। मैं इस घटना को अपने दैनिक कार्यों की व्यस्तता के कारण भूल गया था। उसने मुझे बताया की यह आवर्ती जमा खाता उसके लिए काफी लाभदायक साबित हुआ। उस खाते से उसकी पढ़ाई में काफी मदद मिली। और आज वह अमेरिका में स्थित गूगल कंपनी में काम करता है।

और जीवन के इस सफर का आनंद लेते-लेते मैं पुनः आपने ग्राहकों के साथ एक बार फिर से व्यस्त हो गया.... ।

अनुवादक :

श्री सनोज कुमार, आँचलिक कार्यालय, गुवाहाटी
तथा श्रीमती इंदिरा देउरी, शाखा उजान बाज़ार, गुवाहाटी

*जल है तो कल है।*

अनुवाद एक वैज्ञानिक कला है। इसलिए अनुवाद करते समय दोनों भाषाओं के सौंदर्य और व्याकरण का ध्यान रखने वाला अनुवादक ही श्रेष्ठ कहा जाएगा।

# हिंदी अनुवाद : जटिलता एवं समाधान

**डॉ. कुलवंत सिंह शेहरी**

स्वाधीनता के बाद से ही भारत में हिंदी अनुवाद का महत्व बढ़ गया है। स्वाधीनता से पहले जहाँ प्रशासनिक कामकाज केवल अंग्रेजी में होता था वहीं आज़ादी के बाद केंद्र सरकार सहित कई राज्यों में भी हिंदी का प्रचलन बढ़ गया और राजभाषा अधिनियम 1963 के लागू होने के बाद तो केंद्र सरकार ने सरकारी तंत्र को हिंदी सीखना अनिवार्य कर दिया। दिल्ली में केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो की स्थापना करके अनुवाद विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में देश भर के केन्द्रीय सरकार के उपक्रमों के अधिकारियों के लिए अनुवाद पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं। केंद्र सरकार के कर्मचारियों के लिए भी 21 दिवसीय अनुवाद प्रशिक्षण का प्रावधान है। यही नहीं, बैंकों में राजभाषा अधिकारियों के पद निर्मित किए गए। विभागीय प्रशिक्षण के साथ-साथ डेस्क प्रशिक्षण तथा हिंदी कार्यशालें भी चलाई जा रही हैं। क्योंकि हिंदी देश की सर्वाधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है, इसलिए हर बैंक अपने व्यावसायिक प्रसार के लिए हिंदी अपना रहा है। परन्तु अभी भी उच्च प्रशासनिक अमला और ब्यूरोक्रेट अपना काम अंग्रेजी में करते हैं, इसलिए इन आदेशों को सार्वजनिक करने की जिम्मेदारी विभागीय अनुवादकों की होती है। इसलिए अनुवाद की मूलभूत कला और मर्म को यदि **अनुवादक आत्मसात कर लेता है तो अनुवाद में मूलभाषा की आत्मा जीवित रहती है।** अनुवादक में निम्नलिखित गुण तो होने चाहिए।

### क) दोनों भाषाओं में पकड़ :

अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करते समय यदि अनुवादक को अंग्रेजी भाषा का ज्ञान नहीं है तो स्वाभाविक है कि अनूदित सामग्री में गुणवत्ता नहीं आएगी। इसलिए अनुवादक को दोनों भाषाओं का कम से कम कार्यसाधक ज्ञान होना जरूरी है। यदि महारत है तो ज्यादा अच्छा रहता है। अनुवाद के समय बढ़िया शब्दकोश जरूर पास में रखें। परेशानी के समय ये शब्दकोश आपको सही शब्द के चयन में मदद करेगा। वैकल्पिक शब्द चयन के समय मूलभाषा के संदर्भ का ध्यान रखना बहुत जरूरी है।

### ख) सही शब्द को चुनें :

अनुवाद के समय विषय-वस्तु का प्रसंग आपको सही विकल्प ढूंढने में मदद करेगा। CREDIT शब्द के कई अर्थ हैं। जमा, उधार, साख आदि। अनुवादक को प्रसंग समझकर अनुवाद करना चाहिए कि यहाँ क्रेडिट किस संदर्भ में लिया गया है।

### ग) शब्दानुवाद नहीं भावानुवाद करें :

अनुवादक को पहले सारा पैराग्राफ पढ़कर मूल विषय समझ लेना चाहिए और फिर अनुवादित भाषा में अनुवाद की जाने वाली भाषा की भावना का अनुवाद करना चाहिए। शब्द-दर-शब्द अनुवाद मूलभाषा की आत्मा को गलत संदर्भ देगा। रेलों में अंग्रेजी के वाक्य "DO NOT WASTE WATER" का भावानुवाद होता है "कम पानी का प्रयोग करें" यदि शब्दानुवाद करेंगे तो आएगा "पानी बर्बाद न करें" जो अस्वाभाविक सा लगता है। हमेशा भावानुवाद ही करें। इससे मूल भाषा की आत्मा जीवित रहेगी।

### घ) भाषा के स्वभावानुसार अनुवाद करें :

हर भाषा की अपनी मौलिकता होती है। अनुवाद करते समय पूरा ध्यान रखें कि मूल भाषा की मौलिकता बनी रहे। कर्ता, कर्म और क्रिया का समन्वय हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं के नियमों के अनुसार करें। भाषा सौष्ठव का सम्मान जरूरी है।

### च) अनुवाद छोटे वाक्यों में करें :

अंग्रेजी के वाक्य सामान्यतः बड़े होते हैं। अनुवादक को चाहिए कि वह विषय-वस्तु की मूल भावना को बनाए रखते हुए अनुवाद छोटे-छोटे वाक्यों में करे। न्यायिक विषयवस्तु की सामग्री में यह प्रयोग अत्यन्त लाभकारी रहता है। हिंदी के छोटे-छोटे वाक्य अनुवाद को सुगम बना देंगे।

- सेवानिवृत्त राजभाषा प्रबंधक

*जीवन बचाना है तो जल भी बचाना होगा।*

# राजभाषा शील्ड

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, भिलाई-दुर्ग द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में उल्लेखनीय योगदान के लिए हमारे बैंक की शाखा-भिलाई को - ''सराहनीय पुरस्कार'' से सम्मानित किया गया। चित्र में शाखा प्रबंधक श्री सुरेन्द्र कुमार वैद्य, नराकास-भिलाई के अध्यक्ष श्री एस. चन्द्रशेकरन से स्मृति चिह्न तथा प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए।

आँचलिक कार्यालय गुड़गाँव को वर्ष 2014-15 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने हेतु प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग द्वारा 'क' क्षेत्र की राजभाषा शील्ड प्रदान की गई। शील्ड व प्रमाण-पत्र के साथ आँचलिक प्रबंधक श्री रवि मेहरा, मुख्य प्रबंधक(राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह बेवली, मुख्य प्रबंधक श्री सतीश गुलाटी तथा आँचलिक कार्यालय के सभी स्टाफ सदस्य।

## हमें इन पर गर्व है

बैंक की शाखा-आधार शिला विद्यापीठ, पीतमपुरा में कार्यरत, श्री रूपेश कुमार, सफाई कर्मचारी ने लॉकर रूम में श्री जी. आर. शर्मा के छूट गए बहुत कीमती सामान की जानकारी उन्हें देकर अत्यंत प्रशंसनीय कार्य कर, ईमानदारी का उदाहरण पेश किया। बैंक को उन पर गर्व है।

# सतर्कता प्रशि

दिनांक 5 व 6 फरवरी 2016 को सीबीआरटी, चंडीगढ़ में अनुशासनिक प्राधिकारियों, बी.ओ., ई.ओ., पी.ओ. हेतु प्रशिक्षण
एस.) थे और कार्यक्रम की अध्यक्षता बैंक के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिंदर बीर सिंह (आई.ए.एस.) द्वारा की ग
नायक निदेशक (सीवीसी) तथा श्री राजेश वर्मा एडवाइजर (सीवीसी) को भी विशेष रूप से आमंत्रित किया गया।
निर्देशानुसार सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री रमिंदरजीत सिंह महाप्रबंधक(एलएचओ) चंडीगढ़, श्री राज कुमार बंसल
मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण प्रदान किया। बैंक के वरिष्ठ कार्यपालकों और आंचलिक प्रबंधकों के सानिध्य में आयोजित इस क

# क्षण कार्यक्रम

ण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्यक अतिथि एडवाइजर (चंडीगढ़ प्रशासन) श्री विजय देव (आई.ए.
ई। इस अवसर पर बैंक के कार्यकारी निदेशक श्री मुकेश जैन भी विशेष रूप से उपस्थित थे। कार्यक्रम में श्री आर. एन.
प्रशिक्षण कार्यक्रम श्री एम.जी.श्रीवास्तव मुख्य सतर्कता अधिकारी व श्री दीन दयाल शर्मा महाप्रबंधक (मा.सं.वि.) के
महाप्रबंधक (प्र.का.विधि वसूली विभाग) भी विशेष रूप से कार्यक्रम में पहुँचे। इन सभी अधिकारियों ने सहभागियों का
कार्यक्रम की प्रतिक्रिया अति उत्साहवर्धक रही।

# मस्तिष्क मंथन

दिनांक 11.02.2016 को वित्त मंत्रालय वित्तीय सेवाएं विभाग के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) डॉ. वेद प्रकाश दुबे के मार्गदर्शन में बैंक के सभी राजभाषा अधिकारियों के लिए विशेष मस्तिष्क-मंथन कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें सभी अधिकारियों ने सक्रिय सहभागिता की। संयुक्त निदेशक महोदय ने सभी राजभाषा अधिकारियों को सर्वश्रेष्ठ भारतीय होने का अहसास दिलाया और अपने कार्यों को एक लीडर की तरह संपन्न करने हेतु प्रेरित किया।

लॉर्ड मैकाले के ब्रिटिश संसद में दिए भारतीयों पर दिए गए वक्तव्य पर मुख्य महाप्रबंधक श्री इकबाल सिंह भाटिया, अपने सभी विभागाध्यक्षों व अधिकारियों का मार्गदर्शन करते हुए। 'मस्तिष्क-मंथन' सत्र में सभी स्टाफ सदस्यों व विभागाध्यक्षों ने खुल कर चर्चा की। चित्र में विदेशी विनिमय विभाग के सहायक महाप्रबंधक श्री अर्शजीत सिंह, प्राथमिकता क्षेत्र विभाग के सहायक महाप्रबंधक श्री एच. एस. सिंह, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह बेवली तथा वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा) श्री कंवर अशोक भी दिखाई दे रहे हैं।

मस्तिष्क-मंथन सत्र के दौरान महाप्रबंधक (अग्रिम) श्री वरिंदर गुप्ता 'लॉर्ड मैकाले' का वक्तव्य स्वयं पढ़ते हुए। उनके दाएं दिखाई दे रहे है श्री भुपिंदर सिंह, सहायक महाप्रबंधक, श्री कश्मीर सिंह, सहायक महाप्रबंधक। साथ ही राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा प्रेरित हो रहे स्टाफ सदस्य।

प्रधान कार्यालय, निरीक्षण विभाग

प्रधान कार्यालय, समायोजन विभाग

केन्द्रीय वित्त मंत्री प्रति वर्ष फरवरी के अंतिम दिन केन्द्र सरकार का बजट लोक सभा में पेश करते हैं। वास्तव में बजट केन्द्र सरकार की आय और व्यय का विवरण है। भारतीय संविधान के तहत चुनी गई देश की पहली सरकार ने 23 मई 1952 को अपना पहला बजट पेश किया था जो केवल 405 करोड़ रु. का था। शायद आज हमें जानकर आश्चर्य होगा कि पहला बजट फायदे (Surplus) का था। इसमें लगभग चार करोड़ रु. का लाभ (Surplus) दिखाया गया था। इसकी एक दिलचस्प बात यह थी कि इसमें विदेशी मुद्रा के आंकड़े पौंड स्टर्लिंग में दिखाए गए थे, क्योंकि तब तक अमरीकी डालर को विश्व मुद्रा का दर्जा प्राप्त नहीं था। शायद आप यह जानकर चौंक जाएं कि इस पहले बजट में वित्त मंत्री श्री देशमुख ने पिछले वर्ष की 10 करोड़ रु. की राज-सहायता (Subsidy) को भी समाप्त कर दिया था।

तब से अब तक केन्द्र सरकार का बजट कई हजार गुना बढ़ गया है। आज बजट में सरकार का कुल व्यय लगभग 16,65,000 करोड़ रुपए है। रक्षा व्यय, तेल के आयात पर व्यय, पंचवर्षीय योजनाओं के आकार, मुद्रास्फीति, प्रशासनिक व्यय आदि के कारण आज के बजट का स्वरूप ही बदल गया है। वर्ष 2013-2014 के लिए संसद में बजट दस्तावेजों में वित्त मंत्री के बजट भाषण के अलावा बजट से संबंधित 15 अन्य दस्तावेज (जैसे वार्षिक वित्तीय विवरण, अनुदानों की मांगे, विनियोग विधेयक आदि) शामिल थे।

अतः जाहिर है कि अब बजट की शब्दावली में भी आमूल परिवर्तन आया है, बजट में पेश किए गए दस्तावेज और उनमें प्रयुक्त कतिपय पारिभाषिक शब्द नीचे दिए जा रहे हैं और सरल शब्दों में उनकी संक्षिप्त व्याख्या भी की गई है। यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि जन-साधारण को समझाने के लिए आम भाषा का प्रयोग किया गया है, अतः इसे कानूनी दृष्टि से न देखा जाए।

**वार्षिक वित्तीय विवरण (Annual Financial Statement) :** संविधान के अनुच्छेद 112 के प्रावधानों के अनुरूप इस दस्तावेज में भारत सरकार की अनुमानित प्राप्तियां तथा खर्च दिखाए जाते हैं जिसमें सरकार के विभिन्न लेखे (Accounts) जैसे, संचित निधि (Consolidated Fund), आकस्मिकता निधि (Contingency Fund), लोक लेखा (Public Account) आदि रखे जाते हैं। संविधान के अनुसार वार्षिक वित्तीय विवरण में राजस्व लेखे पर होने वाले व्यय को अन्य व्यय से अलग रखा जाता है। इसी कारण सरकार के बजट में राजस्व बजट और पूंजी बजट को अलग-अलग दर्शाया जाता है।

**लेखानुदान (Vote on Account) :** अनुदानों (Grants) की मांगों को संसद में प्रस्तुत किए जाने के पश्चात उन पर बहस होती है और फिर मंजूरी मिलती है। इस प्रक्रिया में कुछ समय लग जाता है। अतः उतने अनुमानित समय के लिए सरकार का खर्च चलाने के लिए संसद से अग्रिम स्वीकृति प्राप्त की जाती है जिसे लेखानुदान कहा जाता है। इसके अतिरिक्त कभी-कभी ऐसी भी स्थिति आती है कि वर्तमान लोकसभा का कार्यकाल समाप्त होने वाला है और नई लोकसभा के गठन में समय लगेगा। तब अंतरिम अवधि में सरकार के खर्च को चलाने के लिए लेखानुदान की मांग की जाती है।

**पूंजी बजट (Capital Budget) :** पूंजी बजट में पूंजीगत प्राप्तियां और पूंजीगत भुगतान शामिल होता हैं। पूंजीगत प्राप्तियों में निम्नलिखित प्राप्तियाँ शामिल होती हैं :

1. बाजार ऋण अर्थात् सरकार द्वारा जनता से लिए गए ऋण।
2. राजकोषीय हुंडियों की बिक्री के माध्यम से सरकार द्वारा रिज़र्व बैंक और अन्य पार्टियों से लिए जाने वाले ऋण।

*विशेष अवसरों पर उपहार-स्वरूप एक पौधा देने की आदत बनाएं।*

3. विदेशी सरकारों और संस्थाओं से मिलने वाले ऋण।

4. सरकारी उपक्रमों के विनिवेश से प्राप्त धनराशि, और

5. केन्द्रीय सरकार तथा संघ राज्य क्षेत्रों की सरकारों और अन्य पक्षों को दिए गए ऋणों की वसूलियां।

पूंजीगत भुगतान में निम्नलिखित शामिल हैं :

1. जमीन, इमारतों, मशीनों, उपकरणों जैसी आस्तियों के अधिग्रहण पर होने वाला पूंजी व्यय।

2. शेयरों आदि में लगाई जाने वाली पूंजी तथा राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों की सरकारों, सरकारी कंपनियों, निगमों और अन्य पार्टियों आदि को केन्द्रीय सरकार द्वारा दिए जाने वाले ऋण और अग्रिम।

**समेकित निधि (Consolidated Fund) :** इस निधि में सरकार को प्राप्त होने वाले सभी राजस्व, सरकार द्वारा लिए गए उधार, सरकार द्वारा वसूल किए गए उधारों की राशि आदि शामिल होती है। सरकार का सभी खर्च इस निधि से ही किया जाता है। संविधान के अनुच्छेद 266 के अनुसार भारत की समेकित निधि से धन निकालने के लिए संसद का अनुमोदन आवश्यक है।

**आकस्मिकता निधि (Contingency Fund) :** संसदीय अनुमोदन से पूर्व यदि किसी अप्रत्याशित खर्च को पूरा करने की आवश्यकता हो तो उसे इस निधि से पूरा किया जाता है। बाद में इस रकम को संसदीय अनुमोदन लेकर उतनी राशि समेकित निधि से निकालकर वापस आकस्मिकता निधि में डाल दी जाती है। उदाहरण के लिए, न्यायालय के किसी निर्णय के कारण कोई राशि देय हो जाए तो उसे फौरी तौर पर पहले इस निधि से पूरा किया जाता है। यह निधि राष्ट्रपति के नियंत्रण में रहती है। इस निधि में फिलहाल 500 करोड़ रुपए का प्रावधान है।

**अनुदानों की मांग (Demand for Grants) :** साधारणतः भारत सरकार के सभी मंत्रालय अपने व्यय (मांगों) का एक विवरण संसदीय मंजूरी के लिए पेश करते हैं। विधान मंडल रहित संघीय राज्य क्षेत्रों के संबंध में प्रत्येक क्षेत्र के लिए एक अलग मांग प्रस्तुत की जाती है। यह समेकित निधि के लिए किए जाने वाले व्यय का विवरण है। इस व्यय के लिए संसद की मंजूरी आवश्यक है।

**विनियोग विधेयक (Appropriation Bill) :** संविधान के अनुच्छेद 114(3) के अनुसार समेकित निधि से धन की निकासी के लिए संसद में विनियोग बिल लाना आवश्यक है। इस बिल के द्वारा सरकार समेकित निधि से रकम निकालने के लिए संसद से औपचारिक निवेदन करती है। यह प्रस्ताव लोकसभा द्वारा अनुमानों की मांगों की स्वीकृति के बाद लाया जाता है।

**लोक लेखा (Public Account) :** समेकित निधि से भिन्न लेन-देनों से प्राप्त राशि का खाता लोक लेखा कहलाता है। इस खाते में भविष्य निधि, छोटी बचतों से संबंधित लेन-देन, तथा सरकार द्वारा कुछ विशिष्ट (Specific) योजनाओं (जैसे सड़क विकास, प्राथमिक शिक्षा रिज़र्व फंड आदि) के लिए अलग से रखी गई सभी राशि दर्शाई जाती है। यह धन राशि सरकार की अपनी नहीं है, वह इसकी ट्रस्टी है क्योंकि अंततः इसे जमाकर्ताओं को लौटाना होता है।

**पूंजीगत व्यय (Caital Expenditure) :** भूमि, इमारतों, और मशीनों को ग्रहण करने के लिए किया गया व्यय और साथ ही शेयरों में निवेश, राज्यों और संघीय राज्य क्षेत्रों की सरकारों, सरकारी उपक्रमों तथा अन्य पार्टियों को केंद्र सरकार द्वारा दिए जाने वाले ऋण और अग्रिम, पूंजीगत व्यय का हिस्सा होते हैं।

**राजस्व व्यय (Revenue Expenditure) :** इसमें सरकारी विभागों एवं विभिन्न सेवाओं पर किया जाने वाला व्यय, ऋणों पर देय ब्याज, राज-सहायता (Subsidy) आदि से संबंधित व्यय शामिल होता है। दूसरे शब्दों में, जो व्यय

'यूज़ एंड थ्रो' की दुनिया को छोड़ पुनः 'सहेजने' वाली सभ्यता को अपनाया जाए

सरकारी परिसंपत्तियों के सृजन के अलावा अन्य कार्यों पर व्यय होता है वह राजस्व व्यय कहलाता है।

**आयोजना परिव्यय (Plan Outlay) :** सरकार द्वारा केन्द्रीय योजनाओं पर किया जाने वाला राजस्व और पूंजीगत व्यय तथा राज्य सरकारों और संघीय राज्य क्षेत्रों की सरकारों की योजनाओं के लिए दी गई केन्द्रीय सहायता आयोजन परिव्यय के अंतर्गत आती है।

**आयोजना-भिन्न परिव्यय (Non-Plan Expenditure) :** ब्याज के भुगतान, रक्षा व्यय, राज-सहायता (Subsidy), पुलिस, पेंशन, आर्थिक सेवाओं पर किए गए व्यय के अतिरिक्त सरकारी क्षेत्र के उपक्रमों को ऋण तथा संघीय राज्य क्षेत्रों और विदेशी सरकारों को दिए गए ऋणों आदि से संबंधित व्यय को आयोजना-भिन्न परिव्यय कहते हैं।

**करों से प्राप्त राजस्व (Tax Revenue) :** केन्द्र सरकार की आय का मुख्य स्रोत है - प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करों से होने वाली प्राप्तियां प्रत्यक्ष करों में मुख्य रूप से व्यक्तिगत आय कर, निगम कर (Corporate Tax), धन कर (Wealth Tax) शामिल है जबकि अप्रत्यक्ष करों में सीमा शुल्क, उत्पादन शुल्क और सेवाकर शामिल है।

**करों से भिन्न राजस्व (Non-Tax Revenue) :** सरकार की आय का एक अन्य मुख्य स्रोत करों से भिन्न राजस्व की प्राप्तियाँ भी है जिनमें सरकारी उपक्रमों से मिलने वाला लाभांश, ऋणों पर मिलने वाला ब्याज, सरकारी उपक्रमों के विनिवेश (Disinvestment) से प्राप्त धनराशि, स्पेक्ट्रम की बिक्री से होने वाली आय शामिल है।

**राजकोषीय दृढ़ीकरण (Fiscal Consolidation) :** सरकारी घाटे और कर्ज से उबरने के लिए सरकार द्वारा बनाई गई नीति को राजकोषीय दृढ़ीकरण या मौद्रिक स्थिरीकरण कहा जाता है।

**प्राथमिक घाटा (Primary Deficit) :** वित्तीय घाटे की राशि में से पिछले उधार पर दिए गए ब्याज की रकम निकाल कर बाकी की राशि को प्राथमिक घाटा कहा जाता है। इससे हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि और कितना उधार लेना आवश्यक है?

**राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficit) :** जब सरकार का कुल खर्च उसे प्राप्त होने वाले कुल राजस्व (कर्ज के रूप में ली गई राशि को छोड़कर) से अधिक हो तो उसे राजकोषीय घाटा या वित्तीय घाटा कहा जाता है। साधारणतया इस घाटे की राशि मुख्यतया सरकार द्वारा लिए जाने वाले उधारों की द्योतक है।

**राजस्व घाटा (Revenue Deficit) :** राजस्व प्राप्तियों के मुकाबले राजस्व व्यय की अधिकता को राजस्व घाटा कहा जाता है। दूसरे शब्दों में, यदि हमारा कुल राजस्व खर्च हमारी राजस्व प्राप्तियों से अधिक है, तो उसे राजस्व घाटा माना जाएगा।

**वित्त विधेयक (Finance Bill) :** सरकार के वित्तीय प्रस्तावों को लागू करने संबंधी विधेयक (Bill) को वित्त विधेयक कहा जाता है। इस विधेयक में नए करों के प्रस्ताव और वर्तमान कर ढाँचे में फेर-बदल या उसे आगे जारी रखने से संबंधित विवरण का उल्लेख होता है। इस पर संसद की मंजूरी प्राप्त की जाती है।

*घर में चीजों का भंडारण दुरुस्त तरीके से हो ताकि उनके व्यर्थ जाया होने से बचा जा सके*

**स्वीकृत (Voted) :** समेकित निधि (Consolidated Fund) से लिए जाने वाले खर्च के लिए संसद की मंजूरी आवश्यक है। इस मंजूरी को ही स्वीकृत (Voted) कहा जाता है।

**भारित (Charged) :** कतिपय खर्चों के लिए संसद की मंजूरी की आवश्यकता नहीं होती। उसे भारित व्यय कहा जाता है। भारित व्यय में राष्ट्रपति की परिलब्धियां, राज्य सभा के सभापति, उप-सभापति, तथा लोकसभा के अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के वेतन और भत्ते, उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों, भारत के नियंत्रक एवं लेखा-परीक्षक और केन्द्रीय सतर्कता आयोग के अध्यक्ष के वेतन और भत्ते तथा पेंशन, सरकार द्वारा लिए गए ऋणों पर ब्याज और उनकी अदायगी, अदालती डिक्रियों के संबंध में की गई अदायगियों को भारित (Charged) व्यय माना जाता है।

**बजट अनुमान (Budget Estimate) :** आने वाले वित्तीय वर्ष में होने वाली प्राप्तियाँ (आय) और व्यय के अनुमानों को बजट अनुमान के नाम से जाना जाता है।

**प्रत्यक्ष कर (Direct Tax) :** ऐसा कर जिसका सीधा प्रभाव भुगतान करने वाले व्यक्ति या निगम पर पड़ता है। उसे प्रत्यक्ष कर कहा जाता है। इसमें व्यक्तियों पर लगने वाले आय कर, निगम कर, और पूंजीगत लाभ आदि शामिल है।

**अप्रत्यक्ष कर (Indirect Tax) :** जिस कर का भार कर का भुगतान करने वाला व्यक्ति किसी अन्य पर डाल दे, उसे अप्रत्यक्ष कर कहा जाता है। उत्पादन शुल्क (Excise Duty) सीमा शुल्क (Custom Duty), सेवा कर इसके प्रमुख उदाहरण है।

**अनुपूरक बजट (Supplementary Budget) :** यदि संविधान के अंतर्गत बनाई गई विधि द्वारा प्राधिकृत रकम जो वर्तमान वर्ष में किसी विशिष्ट सेवा के लिए खर्च की जानी है, उस वर्ष के लिए अपर्याप्त पाई जाती है या जब चालू वित्तीय वर्ष के दौरान अनुपूरक व्यय के लिए संसद की मंजूरी लेना आवश्यक हो तो राष्ट्रपति की अनुमति से उस व्यय के लिए संसद के समक्ष एक विवरण पेश किया जाता है। इसे अनुपूरक बजट कहते है।

**उत्पादन शुल्क (Excise Duty) :** किसी फैक्टरी/कारखाने से तैयार माल को बाज़ार में भेजने से पूर्व जो कर वसूल किया जाता है। उसे उत्पादन शुल्क कहा जाता है। यह कर अप्रत्यक्ष करों का एक मुख्य हिस्सा है।

**सीमा शुल्क (Custom Duty) :** विदेशों से मंगवाए/लाए जाने वाले सामान पर लगाए जाने वाले कर को सीमा शुल्क कहा जाता है, यह कर भी अप्रत्यक्ष करों का एक अहम भाग है।

**अर्थोपाय अग्रिम (Ways and Means Advance) :** केन्द्रीय बैंक (रिज़र्व बैंक) द्वारा संघ और राज्य सरकारों को उनकी वित्तीय कमियों को पूरा करने के लिए अपने राजकोष से दिया जाने वाला अस्थाई उधार है। यह कुल उधार का बहुत थोड़ा सा भाग है जिसे सामान्यतया तीन महीने की अवधि में लौटाना होता है।

**मुद्रास्फीति (Inflation) :** इसका अर्थ है कि पिछली निश्चित अवधि (माह/तिमाही/वर्ष) के मुकाबले में वर्तमान उसी अवधि में वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में वृद्धि का प्रतिशत, दूसरे शब्दों में मुद्रास्फीति का अर्थ है मुद्रा की क्रयशक्ति में कमी आ जाना।

**मूल्य वर्धित कर (Value Added Tax) :** यह एक प्रकार का उपभोग कर है जो निर्माण या वितरण के समय किसी उत्पाद के मूल्य में वृद्धि करने के लिए लगाया जाता है।

**सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product) :** एक निश्चित अवधि (एक वर्ष) में देश में आधिकारिक रूप

पैकिंग वाली चीजों को कम से कम काम में लें। औद्योगिक कचरे में एक तिहाई अंश इन्हीं पैकिंग्स का होता है

से स्वीकृत सभी तैयार सामान या सेवाओं के बाजार मूल्य को सकल घरेलू उत्पाद कहा जाता है।

**आर्थिक सर्वेक्षण (Economic Survey) :** प्रत्येक वर्ष केन्द्र सरकार के बजट से कुछ दिन पहले भारत सरकार के वित्त मंत्रालय द्वारा तैयार किया गया एक दस्तावेज संसद में पेश किया जाता है जिसे आर्थिक सर्वेक्षण या आर्थिक समीक्षा कहते हैं। इससे देश की आर्थिक प्रवृत्तियों का पता चलता है। अतः इससे बजट में संसाधन जुटाने एवं उनके आवंटन का बेहतर मूल्यांकन करने में सुविधा होती है।

**रेल बजट (Railway Budget) :** रेलवे सरकार द्वारा चलाया जाने वाला प्रमुख वाणिज्यिक उपक्रम है। रेलवे के विस्तार, उसके कर्मचारियों की संख्या, और कार्यकलाप को देखते हुए रेल बजट और रेल व्यय से संबंधित अनुमान, मांगें संसद में अलग से पेश की जाती हैं। तथापि रेलवे की कुल प्राप्तियों और व्यय को भारत सरकार के वार्षिक वित्तीय विवरण (Annual Financial Statement) में शामिल किया जाता है।

- सेवानिवृत्त निदेशक, बैंकिंग प्रभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार
सदस्य, हिंदी सलाहकार समिति, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार

## वित्त मंत्रालय की बैठक

## वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग, राजभाषा विभाग की दिनांक 18 व 19 मार्च की बैठक की मुख्य-मुख्य बातें

दिनांक 18 व 19 मार्च 2016 को गुवाहाटी में वित्त मंत्रालय, वित्तीय सेवाएं विभाग की बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में सभी बैंकों के महा प्रबंधक (राजभाषा) तथा राजभाषा प्रभारी उपस्थित हुए। बैठक की मुख्य-मुख्य बातें इस पत्रिका में इस आशय से प्रकाशित की जा रही हैं कि सभी स्टाफ सदस्य राजभाषा हिंदी और प्रादेशिक भाषाओं में काम करने के प्रति जागरूक हों और जो सदस्य भी अपने स्तर पर इस पुनीत काम को आगे बढ़ाने में अपना सहयोग दे सकें वे अपनी प्रतिभा का इस ओर उपयोग करें ताकि बैंक इस राजभाषा की राह में और तीव्रता से आगे बढ़ सकें।

बैठक में मुख्य रूप से बैठक के प्रथम दिन राजभाषा कार्यान्वीयन हेतु निम्नलिखित महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए।

1. प्रत्येक तिमाही की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन नियमित अंतराल पर करें जिसकी अध्यक्षता कार्यालय प्रमुख द्वारा की जाए।
2. पूर्वोत्तर राज्य अपने हिंदी भाषी स्टाफ सदस्यों को वहां की प्रांतीय भाषाओं का प्रशिक्षण भी प्रदान करें ताकि ग्राहक सेवा में इसका सकारात्मक प्रभाव पड़े।
3. विज्ञापनों पर निर्देश दिए गए कि कम से कम 50 प्रतिशत विज्ञापन हिंदी में और शेष 50 प्रतिशत राशि में से प्राथमिकता क्षेत्रीय भाषाओं को देनी है और फिर बची हुई राशि ही अंग्रेज़ी पर व्यय करनी है।
4. 'ख' व 'ग' क्षेत्र में पुस्तकालय के लिए हिंदी के अतिरिक्त प्रादेशिक भाषाओं की पुस्तकें भी खरीदना।
5. पूर्वोत्तर राज्यों के आंचलिक कार्यालयों द्वारा 'मेघालय दर्पण' पत्रिका का क्रय किया जाना।

संयुक्त निदेशक महोदय द्वारा विभिन्न बैंकों के विभिन्न क्रियाकलापों का लोकार्पण किया गया जिसमें हमारे बैंक की 'अंकुर' दिसंबर 2015 की पत्रिका का तथा उसमें छपी संथाली में प्रकाशित रचना का विशेष रूप से लोकार्पण किया गया।

- प्र. का. राजभाषा विभाग

सौर-ऊर्जा का अधिकाधिक इस्तेमाल करें।

# ग्रामीण की चाह

नेहा कुमारी

एक ग्रामीण ने गाँव में आए एक नेता से पूछा
आप तो प्रत्येक पाँच साल बाद बस वोट माँगने आते थे,

अब तो बिना बताए बीच-बीच में भी आ टपकते हैं।
नेता जी ने बड़ा नम्रता से, दोनों हाथ जोड़ कर कहा
जब आपकी समस्याओं का नहीं होता निदान,
सरकार करने लगती है मेरा अपमान,
हम उठा लेते हैं, सर पर आसमान,
चारों तरफ फैल जाती है, अराजकता की दुकान,
विवश हो जाता है, हमारे देश का संविधान,
मजबूर होकर सरकार से, समर्थन वापस लेकर,
फिर आ जाता हूँ, आपके मकान और आपको तोहफे करता हूँ प्रदान
ताकि पुनः आप मुझे वोट दीजिए, और एक बार फिर सत्ता में भेजिए

नेता जी हमारी समस्याओं के लिए आप चिंतित क्यों हैं?
किन-किन समस्याओं का आपने अभी तक किया है निदान,
इस पर सुनाएँ आप अपना व्याख्यान,

नेता जी ने बड़ी नम्रता से, दोनों हाथ जोड़ कर कहा,
गीता में लिखा है, हम सब यहाँ भिन्न-भिन्न कर्म करने आते हैं,
मैं चाहूँ या न चाहूँ, मुझसे ईश्वर वही कर्म करवाते हैं,
मेरा काम है समस्याओं का चिंतन और निवारण करना
और उसी से अपने परिवार के लिए जीविका अर्जित करना।
क्योंकि परिवार पालन भी मेरा एक कर्म है,
जिसके लिए देश और समाज को बेचना भी एक धर्म है।

ग्रामीण ने फिर पूछा - नेता जी आपने अभी तक
किन-किन समस्याओं का किया है चिंतन और
किन-किन का किया है निवारण

नेता जी ने कहा - वाह! वाह! क्या बात करते हो?
लड़के-लड़की का भेद मिटाया, जात-पात की लकीर मिटाई,
अंतर्जातीय विवाह को बढ़ावा दिया, कम मेहनत करने वाले
कमज़ोर बच्चों को परीक्षा में पास करवाया
घर की अशिक्षित बहू-बेटियों को विद्यालयों में शिक्षित करवाया,
तुम्हारे बच्चों को सिफ़ारिश कर के नौकरी दिलवायी,
धर्म को संगठित करने के लिए धार्मिक उन्माद के पताके लहराए।

और क्या-क्या गिनवाऊँ?
तुम्हारे जैसे लाचार, मूर्ख, अनपढ़, बेबस ग्रामीण को एक मुझ जैसे बड़े नेता से बात करने की आज़ादी भी दिलवाई और पेट भरने के लिए सरकार से बिना काम किए मुफ्त में चावल व गेहूँ दिलवाए।
इतना क्या कम है?

ग्रामीण ने कहा - ये मेरी समस्याएँ नहीं थीं।
अपनी लोकप्रियता में समाज को भी आपने बेच डाला।
वोट पाने के चक्कर में देश का भविष्य अंधकार में डाला।
देश की सभ्यता व संस्कृति को भी मिट्टी में मिलाने चले हो।
लगता है राष्ट्र को भी बेचने चले हो।
लेकिन याद रखो, जनता अब जाग गई है।
अपना वोट उसे देगी, जो देश को ही अपना परिवार माने।
जो देश की गरीबी, भुखमरी, भ्रष्टाचार जैसी बीमारियों से आज़ाद करवाए।
और जो जनता की पुकार सुन, आपकी तरह पाँच साल में नहीं,
पाँच पलों में आए।

- प्रधान कार्यालय,
वित्तीय समावेशन विभाग



एलईडी बल्बों का प्रयोग कर ऊर्जा बचाएँ।

# सब-कुछ संभव है

काव्य-मंजूषा

सोनी कुमार डेहरिया

ये नहीं हो सकता,
वो नहीं हो सकता,
हमारे देश का तो कुछ नहीं हो सकता,
पर "मैं" पूछता हूं क्यों नहीं हो सकता?

**संभव तो सब कुछ है मेरे अजीज़।**
**पर मजबूत इरादा तो हो, कुछ पाने का।।**

एक सवाल,
आपसे ही,
आखिर आपने अब तक,
किया क्या है?
किसी काम को उसके मुकाम तक पहुँचाने के लिए,
या परिस्थिति में बदलाव लाने के लिए,
आपने अपना प्रयास,
ठीक से किया भी या नहीं,
या करने से पहले ही बोल दिया,
ये तो, हो ही नहीं सकता।
ऐसा दृढ़-संकल्प अगर,
काम को न करने का हो,
तो खुदा भी न करेगा, तेरे लिए कोई चमत्कार,
क्योंकि खुदा भी मदद उन्हीं की करता है,
जो मदद खुद की करते हैं।।

होगा वही, जो मंजूर-ए-खुदा है,
पर मेरे अजीज़!
तू अपनी कोशिश तो कर,
यूं तो निवाला भी,
स्वयं तेरे मुख का ग्रास न होगा,
लेकिन अगर लगन सच्ची है तेरी,
तो तुझे आभास भी न होगा,
हवा के बदलते रुख का
और तेरे लिए,
आने वाले सुख का।

**संभव तो सब कुछ है मेरे अजीज़।**
**पर कोशिश तो कर, कुछ करने की।।**

दृष्टांत कोई न दूंगा तुझे,
समझाने के लिए,
पर एक कोशिश जरूर करूँगा,
तेरे विश्वास को जगाने के लिए,
कर्त्तव्य पथ की ओर,
तुझे अग्रसर करने के लिए।

फिर भी अगर तुझे,
कोई संदेह है,
तो उठ, एक पत्थर उठा,
और फेंक कर देख उसे,
किसी तालाब के ठहरे पानी में,
गौर से देख पानी में हुई हलचल को,
शायद तू खुद ही जान पाए,
कि ये जिंदगी ठहरे पानी सी है,
ज़रा सी कोशिश भी इसमें कितनी,
सौगातें ला सकती है।

**इसीलिए संभव तो सब कुछ है मेरे अजीज़।**
**पर नीयत तो हो, खुद को आज़माने की।।**

ये बस आपके मन की इच्छाशक्ति है
जिसका एक नाम 'न' है और दूसरा 'हाँ',
'न' के कारण हार है और 'हाँ' जीत का मीत,
इसीलिए मन के हारे हार है,
और मन के जीते जीत।
पाने वालों ने तो 'खुदा' को भी पाया है,
लेकिन ये संभव वो कर पाया है,
जिसने खुद को आज़माया है।

इसीलिए 'डेहरिया' फिर दोहराता है,
संभव तो सब-कुछ है मेरे अजीज़।
पर खुद पर विश्वास तो कर,
कि तुझमें है हर वो हुनर, मंजिल को अपनी पाने का।।

- राजभाषा अधिकारी
प्र.का. राजभाषा विभाग

# हमारी मातृभाषा हमारा परिचय

-: वैभव मिश्र :-

भाषा किसी भी देश की सांस्कृतिक बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं मूल्योन्मुखी उपलब्धियों की अभिव्यक्तियों की सबल संवाहक होती है। हमारा देश भारतवर्ष विश्व भर में अपनी संस्कृति, भाषा व परंपराओं को लेकर स्वयं के परिचय का मोहताज नहीं है। विश्व भर के लोग हमारे देश के विषय में परिचित हैं और इसके लिए वे हमारे देश के इतिहास और भूगोल को जानने आते रहते हैं।

यह तो हमारे देश के गौरव की बात हुई है किंतु चिंतन का विषय यह है कि हम ही अपने देश की संस्कृति, इतिहास और अपनी भाषा को भूलते जा रहे हैं, चलो माना कि भूलना एक गलती है लेकिन चाहकर भी हम अपने को न जानें, यह तो अच्छी बात नहीं।

हम देखते हैं कि सबको अभिमान होने पर अपना परिचय देने में बड़ा अच्छा लगता है जब हम आपस में बातें करते हैं तो एक दूसरे के बारे में बताते हैं। जैसे :-

पहला व्यक्ति - (रूसी भाषा में) मैं रूसी हूं.... और अपने देश की संस्कृति और भाषा से बहुत प्रेम करता हूँ.... गर्व के साथ बताता है क्योंकि उसे अपने देश से प्यार है।

दूसरा व्यक्ति - (अंग्रेज़ी भाषा में) मैं भारतीय हूँ.... इतना बोलकर वह पहले व्यक्ति की तरह गर्व के साथ न बोल पाया क्योंकि वह ऐसा बोलने में हिचकिचा रहा था वो इसलिए कि वह अपने देश की भाषा और संस्कृति को भुला बैठा था।

पहला व्यक्ति - (हिंदी में बोलते हुए) श्रीमान जी आप अपना परिचय अपनी भाषा में देना क्यों पसंद नहीं करते? क्या आपकी अपनी भाषा नहीं? इतना सुनकर भारतीय व्यक्ति हतप्रभ रह गया कि वह रूसी होकर भी हमें हमारी भाषा में समझा रहा था।

वास्तव में जब हम दूसरों को अपना परिचय दें तो कुछ इस तरह से अपनी शैली में दें कि वह हमसे प्रभावित हो जाए। कहने का अर्थ यह है कि जब आपके पास अपने हथियार हैं तो आप दूसरों के सहारे क्यों? जब-जब भारत की मातृभाषा पर मेरी, लोगों से बात होती है तो वे इसके खिलाफ ही बोलने में लग जाते हैं और यह बात एक बहस का रूप ले लेती है।

मैंने अपने भारत से विदेश जाने वाले लोगों से कनाडा, अमेरिका व ईटली जाने की प्रक्रिया के विषय में मालूम किया तो उन्होंने सारा कुछ बताकर आखिर में बताया कि अंग्रेजी जरूर सीख लेना नहीं तो बड़ी मुश्किल पड़ेगी क्योंकि वहां हिंदी नहीं चलती... इस पर मैं हँसा और बोला कि हिंदी क्यों नहीं चलती? तो वे भड़क उठे और बोले तू जाने तेरी मर्जी... मैंने उनको विनम्रता से जवाब दिया.... कि वहां के लोग अपनी भाषा से बहुत प्रेम करते हैं इसीलिए.... हिंदी नहीं चलती। ज़रा सोचो कि यह उनकी कितनी बड़ी उपलब्धि है कि वे अपनी भाषा हमारे देश में चलाए जा रहे हैं।

कई जगह मैंने भारत में देखा कि लोगों को रोजगार हेतु विदेश जाने पर अंग्रेज़ी सीखने हेतु परीक्षाएं पास करना

*दिन में सूरज की रोशनी से काम चलाएं।*

आवश्यक है जैसे - आइलेट, टॉफेल आदि जो कि अन्य देश विदेशी लोगों को अपने देश में बिना अंग्रेज़ी ज्ञान के रोज़गार नहीं देते। ज़रा सोचो यह उन देशों का भाषा प्रेम नहीं तो और क्या है? ठीक इसी तरह से अपने देश में भी विदेशी लोग हिंदी सीख कर आएं क्या ये नहीं हो सकता, हो सकता है लेकिन क्या किया जाए हमारे तो अपने ही अपनों को भुलाने में लगे हुए हैं।

हम लोगों को हिंदी भाषा के महत्व को समझाने के लिए भारतीय रेलवे विभाग जिसका विश्व भर में महत्वपूर्ण स्थान है, का उदाहरण देकर समझाते हैं :

वास्तव में रेलवे विभाग का हिंदी प्रयोग शत-प्रतिशत रहता है यदि ऐसा न हो तो बहुत से यात्री अपने गंतव्य स्थान पर न पहुंच पाएं क्योंकि हमारे देश में अधिकांश जनसंख्या हिंदी भाषी ही है।

आजकल मैं किसी भी विभाग में जाता हूँ तो वहां के कर्मचारी अपने ग्राहकों से, अगर ग्राहक शिक्षित है तब तो ठीक है लेकिन अगर ग्राहक अशिक्षित है तब भी वो कर्मचारी उस अशिक्षित ग्राहक से भी (साइन प्लीज) ही बोलते हैं। ऐसे में ग्राहक असंतुष्ट होकर चला जाता है क्योंकि वे ऐसा समझते हैं कि ये अंग्रेज़ी जानते हैं तो सारी दुनियां अंग्रेज़ी जानती है जबकि इस दुनिया में कई प्रकार के लोग बसते हैं।

वास्तव में मैं सोचता हूँ जब हम गुलाम हुआ करते थे तो कई सेनानियों ने देश प्रेम और आजादी के लिए जान तक न्यौछावर कर दी और आज हम मात्र अपने हस्ताक्षर भी अपनी मातृभाषा में करने से कतराते हैं। ऐसा लगता है कि किसी ने हमें भारत पाकिस्तान के बॉर्डर पर युद्ध करने के लिए कह दिया हो।

खैर! मैं तो अपने देश की भाषा व संस्कृति के विषय में गर्व के साथ जानने में लगा हुआ हूँ और आप?.... यदि नहीं तो कृपया आप भी आज से ही गर्व के साथ अपने हस्ताक्षर हिंदी भाषा में करके इसकी शुरुआत करें और धीरे-धीरे अपनी हिंदी का प्रयोग बढ़ाते जाएं।

जय हिंद.....

- आंचलिक कार्यालय, पटियाला

# उत्कृष्टता पुरस्कार

आंचलिक कार्यालय, मुंबई की पणजी, गोवा शाखा को वर्ष 2015 के लिए राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यों के लिए बैंक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा तृतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर भारत सरकार गृह मंत्रालय राजभाषा विभाग की सहायक निदेशक, सुश्री सुष्मिता भट्टाचार्य ने शाखा प्रबंधक सुश्री वील्मा शिरोडकर को ट्रॉफी और प्रमाण-पत्र प्रदान किए। उसी दिन सुश्री भट्टाचार्य द्वारा शाखा का राजभाषा संबंधी निरीक्षण भी किया गया और शाखा द्वारा किए जा रहे राजभाषा संबंधी कार्यों की सराहना की गई।

*जितना खाएँ, उतना ही लें।*

# अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर विशेष :

# महारानी अहिल्याबाई होल्कर

-: डॉ. नीरू पाठक :-

हर वर्ष 08 मार्च को हम अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के रूप में मनाते हैं। महिलाओं की पहचान, उनके सम्मान और उनके स्वाभिमान की रक्षा के लिए यह तिथि अत्यंत महत्वपूर्ण है। हमारा देश हमेशा से ही नारी के सम्मान की स्थापना के लिए सदैव अग्रणी रहा है। कहा तो यह भी गया है कि जहाँ नारी की पूजा होती है, वहीं देवताओं का वास होता है किंतु समय के साथ ऐसा दौर भी आया जब नारी की स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई। लड़कों की तुलना में लड़कियों की संख्या निरंतर गिरती जा रही है किंतु कठोरता कब कोमलता से जीती है। महिला सशक्तीकरण को ध्यान में रखकर माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कई योजनाएं प्रारंभ की हैं जिनमें से ''बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ'' तथा ''सुरक्षा बंधन योजना'' प्रमुख हैं। इन योजनाओं के कार्यान्वयन में हमारे बैंक ने भी बढ़-चढ़कर कार्य किया है। जीवन के प्रत्येक कार्य क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी है। यदि वे घर में हैं तो वे अपने घर को स्वर्ग तुल्य बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं और यदि वे किसी अन्य कार्य क्षेत्र में हैं तो वहाँ भी उनकी उपस्थिति को नज़रंदाज़ नहीं किया जा सकता। देश की आज़ादी की लड़ाई में यदि सरोजिनी नायडू, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, सुभद्रा कुमारी चौहान जैसे विश्व प्रसिद्ध नाम हैं तो आधुनिक भारत में भी यह लिस्ट बहुत लंबी है। बछेंद्री पाल, कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स, पी. टी. ऊषा, मेरी कॉम, सायना नेहवाल, सानिया मिर्जा जैसे अनेक नाम हैं जिन्होंने अपने-अपने कार्य क्षेत्र में न केवल महारत हासिल की है अपितु संपूर्ण विश्व में देश का नाम भी ऊँचा किया है। यह संपूर्ण चर्चा अधूरी होगी यदि वर्तमान समय में अपने अदम्य साहस का परिचय देने वाली सुश्री अरुणिमा सिन्हा के नाम का उल्लेख न किया जाए, एवरेस्ट फतेह करने वाली ऐसी प्रथम विकलांग महिला जिसका जीवन साहस, शक्ति, धैर्य तथा दृढ़ संकल्प का पर्याय है और भारत की प्रथम महिला शासिका महारानी अहिल्या बाई होलकर जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन सर्वजन कल्याण के लिए समर्पित किया, का उल्लेख नहीं किया जाए। आइए इस लेख में हम अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में महारानी अहिल्याबाई के जीवन और उनके द्वारा किए गए सामाजिक कार्यों से प्रेरणा लेते हैं।

अहिल्याबाई का जन्म 31 मई 1725 को महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के चौंडी नाम के गाँव में हुआ। उस समय महाराष्ट्र में स्वराज की धूम थी। मध्यप्रदेश में हिंदू स्वराज के संस्थापक महान योद्धा मल्हारराव होलकर इनके

*नहाते समय शॉवर का प्रयोग न करके डिब्बे का प्रयोग करने से काफी पानी बचाया जा सकता है।*

श्वसुर थे। इन्होंने प्रजा के हित एवं सुख-शांति को प्राथमिकता देते हुए शासन किया। इनके पुत्र खंडेराव होल्कर की असमय मृत्यु ने सारी स्थिति को उथल-पुथल कर दिया। उस समय धर्म में रूढ़िवादिता चरम सीमा पर थी तथा सती-प्रथा का चलन था। किंतु जनता के हित को ध्यान में रखते हुए राज्य के पेशवाओं के हाथ में चले जाने पर जनता की पीड़ा को समझते हुए मल्हार राव होल्कर ने धर्म की पाखंडी परंपराओं को तोड़ते हुए अहिल्याबाई को न केवल सती होने से रोका बल्कि राज्य की बागडोर भी उनके हाथ में सौंपने का महत्वपूर्ण निर्णय लिया तथा लोकनिंदा की परवाह न करते हुए समाज में धर्म का नया मापदंड स्थापित किया। उस समय भारतीय स्त्री को शिक्षा व राज्य करने का अधिकार नहीं था। इसके विरुद्ध अहिल्याबाई ने आवाज उठाई। उन्होंने अपनी प्रजा का पालन-पोषण माता के समान किया। पहले पति फिर पुत्र की मृत्यु के अपार दुःख में भी उन्होंने अपना मनोबल तथा धैर्य बनाए रखा तथा राज्य का संचालन सफलतापूर्वक किया। उन्होंने प्रजा से न्यूनतम 'कर' वसूला ताकि जनता को 'कर' देना बोझ न लगे। अपना जीवन सादगी से व्यतीत करते हुए उन्होंने प्रजा का धन प्रजा के हित के कार्यों में ही लगाया। उनका मानना था कि "धन, प्रजा एवं ईश्वर द्वारा दिया गया है जिसकी वह मालिक नहीं बल्कि उसकी संरक्षक हैं। मेरा परम कर्तव्य है कि यह जिनकी कृपा से प्राप्त हुआ है, उनके लिए ही व्यय होना चाहिए।" ऐसे समय में जब शासन और व्यवस्था के नाम पर चारों ओर त्राहि-त्राहि मची हुई थी। वह समय ऐसा था जब स्त्रियों की दशा अत्यंत शोचनीय थी। स्त्री को शिक्षा तथा राज्य करने का अधिकार नहीं था। इसके अतिरिक्त जाति प्रथा का भी बोलबाला था। कुल मिलाकर गरीब, असहाय स्त्री सभी नारकीय जीवन जी रहे थे। प्रजा दीन-हीन अवस्था में सिसक रही थी। धार्मिक अंधविश्वास तथा भय का वातावरण चारों ओर व्याप्त था। ऐसे काल में अहिल्याबाई ने न केवल अपने राज्य में बल्कि अपने राज्य की सीमाओं के बाहर भारत के कई जीर्ण-शीर्ण धार्मिक स्थलों का जीर्णोद्धार कराया। प्रसिद्ध तीर्थों और अन्य स्थानों में भी मंदिर बनवाए। नदियों में घाट बनवाए, कुओं तथा बावड़ियों का निर्माण करवाया, स्थान-स्थान पर प्याऊ बनवाएं, रास्ते एवं पुलों का निर्माण करवाया, रास्तों के दोनों ओर वृक्षारोपण करवाया, भूखों के लिए अन्नक्षेत्र खोले। न केवल मंदिरों का निर्माण करवाया बल्कि वहाँ विद्वान पुजारियों की नियुक्ति कर, उनके भरण-पोषण की जिम्मेदारी भी ली। तीर्थयात्रियों के लिए धर्मशालाओं, बावड़ियों तथा अन्नक्षेत्र का निर्माण करवाया। वह न केवल धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों की कर्णधार थीं, इसके साथ ही समाज-शत्रुओं व असमाजिक तत्वों पर रोक लगाकर उनके पुनर्वास की व्यवस्था भी की। समस्त प्रजा को न्याय मिले इसके लिए गाँवों में पंचायती व्यवस्था, न्यायालयों की स्थापना तथा कोतवालों की नियुक्ति की गयी थी। वे अपनी प्रजा का पालन अपनी संतान की तरह करती थीं तथा अपनी प्रजा के लिए अंधेरे में आशा की किरण के समान थीं। उनके इन सामाजिक, राजकीय कार्यों से प्रजा प्रसन्न व संतुष्ट थी। उनके अनुसार उनके जीवन का लक्ष्य ही प्रजा का संतोष था। प्रजा के सुख-दुख की जानकारी वे स्वयं प्रत्यक्ष रूप से लेती थी तथा उनका न्यायपूर्ण हल निकालती थीं। उनके राज्य में पूर्णतः शांति का वातावरण था इसी कारण आस-पास के क्षेत्रों की निजामशाही तथा पेशवाओं से त्रस्त लोग उनके राज्य में आकर बसने लगे थे। महारानी अहिल्याबाई किसी बहुत बड़े क्षेत्र की रानी नहीं थी किंतु अपने सद्कार्यों से उनका व्यक्तित्व अविस्मरणीय है।

यह शाश्वत सत्य है कि भारत की महिला पहले भी सशक्त थी और आज भी प्रत्येक क्षेत्र में नयी ऊँचाइयों को छू रही है।

- प्रधान कार्यालय, राजभाषा विभाग

दाँत साफ करते समय वॉश बेसिन का नल खुला रखने से 5-6 लिटर पानी व्यर्थ बह जाता है।

# मस्तिष्क मंथन

मस्तिष्क मंथन सत्र के दौरान आंचलिक प्रबंधक श्रीमती हरिंदर सचदेव स्वयं वित्त मंत्रालय द्वारा प्रेषित मैकाले का संदेश पढ़ते हुए।

आंचलिक कार्यालय, गुड़गांव के आंचलिक प्रबंधक श्री रवि मेहरा, मस्तिष्क मंथन कार्यक्रम के दौरान समस्त स्टाफ सदस्यों को संबोधित करते हुए। चित्र में श्री सतीश गुलाटी, मुख्य प्रबंधक, श्री राजिंदर सिंह बेदली) (राजभाषा) तथा राजभाषा प्रबंधक श्री त्रिलोचन सिंह भी दिखा दे रहे हैं।

दिनांक 04.03.2016 को पणजी, गोवा में मस्तिष्क मंथन कार्यक्रम में शाखा के कार्मिकों को संबोधित करते हुए श्री पवन कुमार जैन, वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

आंचलिक कार्यालय, भोपाल

आंचलिक कार्यालय, बरेली

आंचलिक कार्यालय, भोपाल

दिन में कम से कम एक बार
अपने आप से बात किया करें।
नहीं तो आप दुनिया में
एक उत्कृष्ट इंसान
की मुलाकात
से वंचित रह जाएंगे।

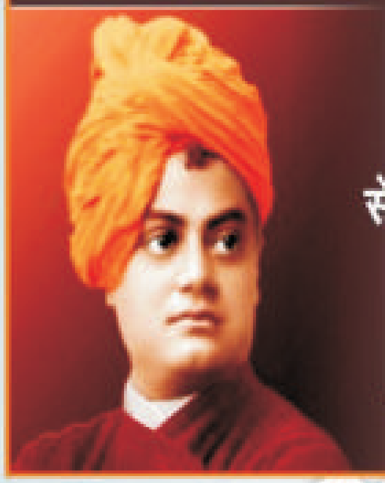

- स्वामी विवेकानन्द

प्रदीप कुमार : प्रधान कार्यालय, सतर्कता विभाग

# ज़रा सोचिए.....

देवेन्द्र कुमार

प्रातः दस बजे का समय रहा होगा। जी हाँ कर्मचारियों के लिए कार्यालय जाने का और छात्रों के लिए विद्यालय जाने का समय। कार्यालय जाने के लिए मैं बस के इंतज़ार में सड़क किनारे खड़ा था। सड़क पर वाहनों की आवाजाही भी खूब थी। सभी को कहीं न कहीं जाने की जल्दबाजी थी। एक बूढ़ी महिला सड़क पार करने के लिए लोगों से सहायता मांग रही थी। शायद उसे आँखों से ठीक से दिखाई नहीं दे रहा था। बहुत समय से वह आवाज़ लगा रही थी। उसकी गुहार में विनम्रता के भाव की कमी तो नहीं थी लेकिन वहाँ से गुज़रने वाले लोग ही बेजान थे। देखने से प्रतीत होता था कि महिला किसी निम्नवर्गीय परिवार से है और कपड़े भी पुराने पहन रखे थे। आँखों में बेचैनी और मदद की आस साफ दिखाई दे रही थी कि पता नहीं कब तक सड़क पार कर पाएंगी। कोई भी व्यक्ति उसे सड़क पार कराने की ज़हमत नहीं उठा रहा था। सभी उसकी पुकार को मानो जानबूझकर अनसुना कर रहे थे, तभी खाकी पेंट व सफेद शर्ट में एक बालक जो किसी सरकारी विद्यालय का छात्र लग रहा था, ने महिला के हाथों को पकड़कर सड़क पार कराई और पूछा कि माताजी आपको कहाँ जाना है? महिला ने जवाब दिया कि बेटा मुझे केवल सड़क पार करने में कठिनाई हो रही है मैं यहाँ से अकेले ही पैदल चली जाऊंगी और वह बालक को आशीर्वाद देते हुए चली गई। मनुष्य में जब तक संवेदनाएं जीवित हैं तब तक ही समाज, रिश्ते और सहयोग कायम हैं। पीठ पर बस्ता लादे वह बच्चा महिला को सड़क पार कराने के बाद खुशी व दुगुने उत्साह से अपने विद्यालय की ओर निकल गया। बात सिर्फ सड़क पार कराने की नहीं है। बस के इंतजार में मैं यही सोच रहा था कि क्या संवेदनाएं अब कुछ लोगों तक ही सीमित रह गई हैं या फिर हम जानबूझ कर अनजान बने हुए हैं।

ज़रा सोचिए.............?

- आँचलिक कार्यालय, भोपाल

# अपाहिज

-: प्रदीप कुमार रॉय :-

'दिन भर की थकी-हारी और फिर ऊपर से ऑफिस में बॉस की किच-किच से परेशान हो कर ... दौड़ी-भागी ... गाड़ी के समय पर जब मैं स्टेशन पहुंची, तो मेरे दिमाग का पारा शिखर तक पहुँच गया था। स्टेशन पर घोषणा की जा रही थी .... "अमृतसर से चलकर लखनऊ, मुगलसराय और पटना के रास्ते हावड़ा जाने वाली गाड़ी 'पंजाब मेल' अपने निर्धारित समय से चार घंटे विलम्ब से चल रही है ... ।" मैंने मोबाईल को ऑन किया ... स्क्रीन पर देखा, उस समय शाम के सात बजने को थे।

"गाड़ी ग्यारह बजे आएगी .... इसका मतलब अभी और चार घंटे प्लेटफार्म पर इंतजार करना पड़ेगा....." ऐसा सोचते हुए मैंने अपने आप को कोसा। आखिर गाड़ी का 'स्टेटस' मैंने स्टेशन आने से पूर्व ऑफिस में इन्टरनेट पर क्यों नहीं देखा।कम-से-कम प्लेटफार्म पर चार घंटे पड़े रहने की फ़ज़ीहत तो नहीं होती। प्रतीक्षालय के एक कोने में एक कुर्सी खाली पड़ी थी वहीं जाकर अपना सामान रखा और अपने परिक्लांत व स्थूल शरीर को कुर्सी पर धड़ाम से पटका और चैन की साँस ली।

मेरे सामने ऑफिस का दृश्य नाच रहा है .... सुबह दस बजे से ही ऑफिस में हलचल मची रही। सभी छुट्टी के मूड में थे ... क्योंकि कल से होली की छुट्टियाँ हैं ... 'सेकंड-सैटरडे' वगैरह मिला कर कुल चार दिन की छुट्टी बन रही है। .... और लम्बी छुट्टियों से पहले वाले 'वर्किंग-डे' में जैसा अमूमन होता है वैसा ही कुछ हाल था, अपने ऑफिस का। दफ्तर के काम से परे सभी अपने-अपने व्यक्तिगत कार्यों में व्यस्त थे। ऑफिस में ही कंप्यूटर पर... कोई बस की ..., तो कोई ट्रेन की टिकट बुक करवा रहा था ... या फिर कोई टिकट का प्रिंट ले रहा था .... । छुट्टियों में घर ले जाने के लिए कोई बाज़ार से सामान ला कर पैक कर रहा था ..., तो कोई फ़ोन पर अपने यार-दोस्तों को 'होली' की शुभकामनाएँ देने में व्यस्त था, वगैरह-वगैरह ... । एक मैं ही थी जिसे बॉस ने काम की एक लम्बी फेहरिस्त पकड़ा रखी थी। और बार-बार मुझे अपने पास बुलाकर कंप्यूटर पर उनके काम करते हुए जो कठिनाइयाँ आ रही थीं, उन्हें सुलझाने के लिए मेरी सहायता ले रहे थे। मैं सारा दिन इन्हीं में उलझी रही। मुझे 'लंच' के लिए भी फुर्सत नहीं मिली। लंच के बाद करीब-करीब सभी लोग ऑफिस छोड़ चुके थे।

शाम के पांच बज रहे थे। मुझे भी ऑफिस से निकलना था। कमरे से अटैची लेकर सात बजे की गाड़ी पकड़नी थी। इसके लिए करीब एक घंटे का समय तो लगना ही था। एक-एक पल मुझे अब भारी पड़ रहा था। जैसे-जैसे समय बीत रहा था, मुझे तनाव-सा महसूस होने लगा था। मेरे और 'बॉस' के अलावा ऑफिस में कोई नहीं था। मुझे सौंपे गए सभी काम को निपटा कर मैं अपनी सीट को समेट ही रही थी कि एकाएक 'इण्टरकॉम' पर मुझे बॉस ने अपने केबिन में बुलाया। मैंने उन्हें भी अपने कार्य में उलझे हुए परेशान पाया। बॉस दरअसल कंप्यूटर पर कार्य करने में सिद्धहस्त नहीं हैं। आज बड़े-बाबू की अनुपस्थिति के कारण ही उन्हें यह सब करना पड़ रहा है।

फिर उन्होंने मेरी ओर देखते हुए कहा, "मुझे मालूम है तुम्हें भी गाड़ी पकड़नी है ... बस, एक मेल भेज कर चली जाना ... मंत्रालय से है, ज़रूरी है ... "और पेन-ड्राइव को मेरी ओर बढ़ाते हुए, "एम-ओ-एफ फाइल को अटैच कर देना" कह कर अपने काम में फिर व्यस्त हो गए। मुझे गुस्सा तो आ रहा था, पर अपने-आप को संयत रखते हुए अपनी सीट पर आई ... और काम में लग गयी। पर काफी मशक्कत के बाद भी काम नहीं हो पाया। 'सर्वर-डाउन' होने के कारण फाइल अटैच नहीं हो पा रही थी ... इस प्रकरण में समय भी काफी बर्बाद हो गया ... गाड़ी का समय हो चला था ... अब मैं और अधिक जोखिम नहीं लेना

**बड़े डिब्बे के स्थान पर छोटा डिब्बा लेने से भी पानी की बचत की जा सकती है।**

चाहती थी ... इस तरह काम को वहीं अधूरा छोड़ बॉस को अपनी स्थिति से वाकिफ़ कराया और जाने की अनुमति मांगी।

"थोड़ी देर और कोशिश कर लेती ...... मैं तुम्हें अपनी गाड़ी से स्टेशन छोड़ देता ... ऐज़ यू विश ... चलो, कोई बात नहीं, मैं देख लूंगा .... तुम चलो ... ओ.के., हैप्पी होली .. एंड सेफ जर्नी !" कह कर उन्होंने मुझे जाने की इज़ाज़त दी। ...... मैंने न उनके अभिनन्दन का शुक्रिया अदा किया और न ही उन्हें कोई विश .... शाम के छः बज चुके थे, मैं 'लेट' हो चुकी थी ... दिन भर के परिश्रम के बावजूद मुझे बॉस की शाबाशी तो दूर सहानुभूति भी नहीं मिली। गुस्से से आग-बबूला हो कर केबिन के दरवाज़े को धड़ाम से बंद कर मैं बाहर आई और ऑटो से दौड़ी-भागी मैं कमरे पर ... और फिर वहाँ से सामान ले कर स्टेशन पहुंची।

".... काश गाड़ी का 'स्टेटस' देख लिया होता !! बॉस के काम में कुछ सहायता तो हो जाती .... !! "अब मुझे बॉस को इस तरह असहाय अवस्था में छोड़कर आना बुरा लग रहा था।

ऑफिस की आज की घटनाओं को सोचते हुए कब मेरी आँख लग गई मुझे पता ही न चला। प्रतीक्षालय में हो रहे यात्रियों के शोरगुल से मेरी नींद टूटी तो देखा मेरी गाड़ी प्लेटफार्म पर आ चुकी थी। मैं हड़बड़ा कर उठी और प्लेटफार्म पर लगी गाड़ी के 'बी-2' कोच की ओर भागी। अपने सामान को लगभग घसीटते हुए डिब्बे तक दौड़कर हांफती हुई पहुंची। गाड़ी की सिग्नल हो चुकी थी। आनन-फानन में मैं कोच में दाखिल हुई और गाड़ी चल पड़ी। डिब्बे में अंधेरा छाया हुआ था और लगभग सन्नाटा भी ... सभी अपने-अपने बर्थ पर बिस्तर जमा चुके थे।

डिब्बे में प्रवेश करते ही  अपनी बर्थ, 17 पर, किसी को चादर ओढ़े सोते हुए देख मैं गुस्से से उत्तेजित हो पड़ी, "हैलो, मेरा बर्थ छोड़िए ..." मेरी इस बेरूखी और कर्कश भरे स्वर में दिन भर की अकथ्य थकान का प्रभाव था। मेरे इस अप्रत्याशित बर्ताव से वह यात्री सकपका कर उठ खड़ा हुआ और कुछ कहना चाहते हुए भी मेरे निहायत ही अभद्र व्यवहार के संकेत से कुछ न कह कर ... बिस्तर को जल्दी से समेटते हुए ... लपक कर ऊपर की बर्थ पर चला गया .... मेरी 'साइड लोअर-बर्थ' को छोड़ते हुए।

कोच में मद्धिम-सी रोशनी थी। उस धुंधलके में मैंने जो कुछ भी देखा मुझे विश्वास ही नहीं हो पा रहा था। जब मैंने अपनी अटैची को सीट के नीचे सरकाना चाहा तो किसी वस्तु से वह अड़ रही थी, उसे हटाने के लिए जब मैंने झुक कर करीब से देखा तो मेरा शक यकीन में बदल गया, मेरे तो मानों पैरों तले ज़मीन ही खिसक गई हो ...... सीट के नीचे रखे एक जोड़ा 'जयपुर-फुट' और बैसाखी को देख .... !!! यात्री दोनों पैरों से अपाहिज है।

मैं हत-प्रभ होकर एक क्षण के लिए ट्रेन के फ़र्श पर यूं ही बैठी रह गयी मानो जैसे मेरे पैरों को लकवा मार गया हो। मेरी सूझ-बूझ खो गई। मैं किंकर्तव्यविमूढ़ हो अपने शिथिल व अचेतन हुए अंग-प्रत्यंगों को छूकर महसूस किया .... मानो ये बेजान और संकुचित हो गए हैं। मेरी मानसिकता जैसे अपाहिज़ और अपंग हो गयी है .....। एक अनजाने व्यक्ति के साथ किए गए मेरे अमानवीय, विवेकशून्य तथा स्वार्थपूर्ण व्यवहार से मैं बेतहाशा लज्जित थी। मेरे द्वारा उच्चारित कटु शब्द मेरे ही हृदय में टीस पैदा कर रहे थे। मेरे कलुषित आचरण पर यह एक कठोर और असह्य प्रहार था।

अपनी अपाहिज हुई मनःस्थिति से अभी मैं जूझ ही रही थी कि तभी मोबाइल की घंटी बज उठी .... बॉस का कॉल था .... मुझे इस घटना से बॉस के साथ किये गए मेरे बर्ताव पर भी अफ़सोस हो रहा था .... और उन्हें मैंने अपनी सफाई देनी चाही .... उनके कुछ कहने से पहले मैंने ही अपनी बात रख दी, "सॉरी सर, .... हैप्पी होली .... , मैं आते समय आपको विश करना भूल गई .... ।"

"कोई बात नहीं, मैंने तो तुम्हें यह बताने के लिए फ़ोन किया कि 'मेल' भेज कर मैं ऑफिस से घर आ गया हूँ, तुम निश्चिन्त होकर अपनी छुट्टियाँ इन्जॉय करना .... गुड-नाईट एंड टेक केयर" ... उनके  इस कथन से मुझे सद्यः-घटित घटना की पुनरावृत्ति परिलक्षित हो रही थी। ऐसा लग रहा था कि दफ्तर के प्रतिकूल परिवेश से उत्पन्न अपनी अपंगता से उन्होंने बखूबी निज़ाद पा ली हो। जिस तरह यात्री ने अपनी शारीरिक अक्षमता के बावजूद अपने कार्य में सफलता पा ली।

रात के बारह बज रहे थे, गाड़ी अपनी पूरी रफ़्तार से अपने गंतव्य स्टेशन की ओर भाग रही थी। बॉस भी अपने कार्य की सम्पन्नता से संतुष्ट होकर निश्चिन्त हो अब तक गहरी नींद में सो रहे होंगे .. .. पर मेरी आँखों में नींद नहीं आई ... मेरा हृदय विस्मय तथा अनजानी आशंका से कम्पायमान होने लगा ... मेरे चेहरे पर छा गयी थी-एक अजीब आशंका की छाया। मैं अन्दर-ही-अन्दर अपने आप को अपमानित-सा महसूस करने लगी ... वैचारिक ऊहापोह में, मैं रात भर जागती रही ... आखिर सुबह होने पर मैं अपने सहयात्री का सामना कैसे करूँगी .... ???

- प्रधान कार्यालय, सतर्कता विभाग।

**यदि पानी आधा गिलास पीना हो तो कृपया पूरा गिलास न भरवाइए।**

# हिंदी / पंजाबी कार्यशालाएं

दिनांक 23 फरवरी 2016 को प्रधान कार्यालय स्तरीय हिंदी कार्यशाला में स्टॉफ सदस्यों को हिंदी के प्रति प्रेरित करते राजभाषा विभाग के महाप्रबंधक श्री दीन दयाल शर्मा।

आँचलिक कार्यालय, मुम्बई

आँचलिक कार्यालय, जालंधर

आंचलिक कार्यालय, दिल्ली-2

आँचलिक कार्यालय, जयपुर

आँचलिक कार्यालय, होशियारपुर

आंचलिक कार्यालय, भोपाल

# हिंदी पंजाबी कार्यशालाएं

आंचलिक कार्यालय दिल्ली-1 द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला में स्टाफ सदस्यों का मार्गदर्शन करते महाप्रबंधक श्री सुभाष क्वात्रा। इस अवसर पर आंचलिक प्रबंधक श्री जी. एस. सरना ने भी सहभागियों को संबोधित किया।

आँचलिक कार्यालय, हरियाणा

आँचलिक कार्यालय, देहरादून

आंचलिक कार्यालय, अमृतसर

सीबीआईटी, चंडीगढ़

आँचलिक कार्यालय, चंडीगढ़

# बढ़ता जल संकट और जल प्रबंधन

ताराचंद

जल ही जीवन है। उक्त पंक्ति एक नितांत सत्य है। आज देश का एक बड़ा भू-भाग सूखे की भयंकर स्थिति का सामना कर रहा है। एक आंकलन के अनुसार, वर्तमान समय में देश के कई राज्य, जिसमें महाराष्ट्र का मराठवाड़ा क्षेत्र, उत्तर प्रदेश व मध्यप्रदेश का बुंदेलखण्ड क्षेत्र, कर्नाटक, तेलंगाना,व गुजरात के कई संभाग भंयकर सूखे की चपेट में है। केन्द्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट को देश के सूखे से प्रभावित क्षेत्रों की जो रिपोर्ट सौंपी है, उसके अनुसार देश लगभग एक चौथाई भू-भाग में भंयकर सूखे से प्रभावित है और लगभग 33 करोड़ लोग इससे प्रभावित हैं। देश के अनेक राज्य भंयकर सूखे की मार झेल रहे हैं। कुएं, बावड़ी, तालाब, बाँध आदि लगभग सूख चुके हैं, ऐसी परिस्थिति में मनुष्य के साथ- साथ पशुधन को भी जीवन यापन के लिए अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है। भारत सरकार द्वारा देश के सैकड़ों जिलों को सूखाग्रस्त घोषित कर दिया गया है, ऐसे समय में उचित जल-प्रबंधन की विशेष व्यवस्था करने की नितांत आवश्यकता है।

इस परिप्रेक्ष्य में, हमें भारत के एक पूर्व प्रधानमंत्री द्वारा वर्षों पूर्व एक अत्यंत महत्वपूर्ण सुझाव व्यक्त किया था, जिसमें उन्होंने विचार व्यक्त किया कि नदियों को आपस में जोड़ा जाना चाहिए ताकि वर्षा ऋतु में अतिवृष्टि के कारण जिन नदियों में बाढ़ आती है उनका पानी व्यर्थ ही बह कर बर्बाद न होने पाए, अपितु उसका उचित संचयन कर विभिन्न जल चैनलों के माध्यम से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में समान रूप वितरित कर दिया जाए। उक्त विचारों पर चहुं ओर सकारात्मक प्रतिक्रिया हुई थी। कालांतर में उस दिशा में कोई सार्थक प्रयास नहीं किए गए। यदि उस दिशा में एक सकारात्मक पहल की जाती तो जो परिस्थितियां सूखे को लेकर आज उत्पन्न हुई है उनका सामना न करना पड़ता। वर्षा ऋतु में, जैसा कि हम देखते हैं प्रतिवर्ष करोड़ों लीटर पानी नदियों में बाढ़ के कारण उचित जल संचयन व्यवस्था न होने के कारण व्यर्थ बह जाता है, उसे रोका जा सकता है।

भारत एक विशाल देश है, जिसके कुछ भू-भागों में प्रत्येक वर्ष अतिवृष्टि होती है, तो कुछ भू-भागों में सामान्य से बहुत कम वर्षा होती है, जिन प्रदेशों में लगातार कुछ वर्षों तक सामान्य से कम या बहुत कम वर्षा होती है उन भू-भागों में सूखे जैसे हालात उत्पन्न हो जाते है। दूसरी ओर जिन प्रदेशों में अतिवृष्टि के कारण बाढ़ आती है उन क्षेत्रों में जल का संचयन इस प्रकार से किया जाए कि बांधों के भरने के बाद

*पर्यावरण-संरक्षण से अभिप्राय केवल पेड़-पौधों के संरक्षण एवं हरियाली से ही नहीं बल्कि........*

बचे हुए जल को नहरों के माध्यम से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में वितरित कर दिया जाए। यदि उक्त अवधारणा को वास्तविक रूप दिया जाए तो जल संकट से निपटने में यह एक बहुत बड़ी उपलब्धि होगी। यहां हम आधुनिक भारत की एक अति महत्वपूर्ण परियोजना का उल्लेख न करें तो उक्त वर्णित विचारों का आज के परिप्रेक्ष्य में सही आंकलन नहीं कर पाएंगे। संक्षेप में इस परियोजना के कुछ मुख्य तथ्य इस प्रकार हैं :

भारत की स्वतंत्रता से पूर्व, वर्ष 1940 के उत्तरार्द्ध में श्री कंवर सैन जोकि पेशे से एक हाईड्रोलिक इंजीनियर थे, ने सर्वप्रथम एक विचार दिया और प्रस्तावित किया कि हिमालय से निकलने वाली नदियों, जिनका बहाव क्षेत्र पंजाब होते हुए पाकिस्तान की ओर जाता है, के जल का संग्रहण करके थार रेगिस्तान के बीकानेर संभाग व जैसलमेर के उत्तर पश्चिम संभाग की 20 लाख हेक्टेयर भूमि की सिंचाई की जा सकती है। वर्ष 1957 में, भारत और पाकिस्तान के मध्य एक जल समझौते पर हस्ताक्षर हुए। तदनुसार भारत को यह अधिकार प्राप्त हुआ कि वह सतलुज, ब्यास व रावी नदी के जल का सिंचाई हेतु प्रयोग कर सकता है। उक्त अवधारणा को एक विशाल परियोजना का रूप प्रदान किया गया और राजस्थान नहर के रूप में वर्ष 1965 में कार्य प्रारम्भ किया गया। उक्त परियोजना को पूरा होने में काफी विलम्ब हुआ, जिसके कई कारण थे। अन्ततः 1983 में उक्त परियोजना परिपूर्ण हुई, जिसका नामकरण पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के निधन के पश्चात वर्ष 1985 मे इंदिरा गांधी नहर परियोजना दिया गया। उक्त नहर के निर्माण से राजस्थान में हरित क्रांति शुरुआत हुई। पंजाब, हरियाणा के अतिरिक्त राजस्थान राज्य के सात जिलों से यह नहर गुजरती है जिसका सीधा लाभ इन जिलों को मिलता है जबकि जैसलमेर जिले की 6670 वर्ग किलोमीटर व बाड़मेर जिले की 37 वर्ग किलोमीटर भूमि को सिंचाई की सुविधा प्राप्त हो रही है जिसके कारण रेगिस्तान की सूखी भूमि हरियाली से परिपूर्ण हो गई। आज वहां चहुं ओर हरे-भरे खेत नजर आते हैं व सरसों, कपास, गेहूं इत्यादि की खेती से संपूर्ण संभाग में खुशहाली के दर्शन होते हैं तथा वहां के लोगों का शहरों की ओर पलायन न के बराबर है।

इतिहास में जल प्रबंधन का एक और सटीक उदाहरण बुंदेलखण्ड के चंदेल शासकों का मिलता है, जिन्होंने सदियों पूर्व बुंदेलखण्ड संभाग में कई बांधों का निर्माण करवाया तथा सभी बांधों को आपस में जल मार्ग से इस प्रकार जोड़ा गया कि वर्षा काल में सभी बांधों में जल संचयन समान रूप से हो सके। फलस्वरूप संपूर्ण संभाग में वर्ष भर जल की भरपूर उपलब्धता रहती थी तथा भूमि में जल का स्तर भी काफी ऊँचा बना रहता था। आज जब हम बुंदेलखण्ड में सूखे की भयावह तस्वीर देखते हैं तो हमें चंदेलशासकों के उचित जल प्रबंधन की प्रशंसा करनी चाहिए और उनके दूरदर्शिता पूर्ण उपायों से प्रेरणा लेनी चाहिए।

आज के परिदृश्य में सूखे की भयावह समस्या से निपटने के लिए इस प्रकार की दीर्घकालीन योजनाओं पर काम करना होगा ताकि वर्षाकाल में वर्षा का जल बह कर व्यर्थ न जाने पाए। संपूर्ण भारतवर्ष में सभी नदियों को लिंक नहरों के माध्यम से इस प्रकार जोड़ा जाए ताकि अतिवृष्टि वाले क्षेत्रों के जल को कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भेजा जा सके ताकि सूखे जैसी स्थिति से बचा जा सके। यहां इस तथ्य को भी नकारा नहीं जा सकता कि हमारी जनसंख्या नियंत्रण के लिए कोई ठोस उपाय नहीं हो रहा है जबकि हमारे सीमित संसाधनों पर इस का अतिरिक्त बोझ पड़ रहा है, इस पर भी अवश्य ध्यान देना चाहिए।

- प्र.का. राजभाषा विभाग

# संसदीय राजभाषा समिति की प्रश्नावली संबंधी संगोष्ठी

संसदीय राजभाषा समिति के आश्वासन को पूरा करते हुए बैंक द्वारा संसदीय राजभाषा समिति की प्रश्नारवली पर विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया। 'क' क्षेत्र में आयोजित इस संगोष्ठी में वित्त मंत्रालय वित्तीय सेवाएं विभाग के संयुक्त निदेशक (राजभाषा) डॉ. वेद प्रकाश दुबे ने बैंक के सभी राजभाषा अधिकारियों को संसदीय राजभाषा समिति द्वारा राजभाषा हिंदी की स्थिति को गंभीरता से लिए जाने की जानकारी देते हुए प्रश्नावली की सर मद पर सभी राजभाषा अधिकारियों को प्रशिक्षित किया और सहभागियों की शंकाओं का समाधान किया।

# बैंक द्वारा प्रादेशिक भाषाओं के महत्व विषय संगोष्ठी

दिनांक 18.03.2016 को आंचलिक कार्यालय गुवाहाटी द्वारा 'प्रादेशिक भाषाओं के महत्व' के विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में मुख्य वक्ता प्रधान कार्यालय राजभाषा विभाग के मुख्यक प्रबंधक (राजभाषा) श्री राजिंदर सिंह बेवली थे। इस अवसर पर आंचलिक प्रबंधक गुवाहाटी, श्री राजू दास ने भी पूर्वोत्तर राज्यों की शाखाओं/कार्यालयों में प्रादेशिक भाषाओं के प्रयोग से ग्राहक सेवा पर पड़ने वाले प्रभावों की सकारात्मतकता से स्टाफ सदस्यों को अवगत करवाया। चित्र में आंचलिक प्रबंधक श्री राजू दास, मुख्य प्रबंधक श्री बेवली तथा आंचलिक कार्यालय के कुछेक स्टाफ सदस्य भी दिखाई दे रहे हैं।

# उत्कृष्टता अवार्ड

बैंक को हाल ही में लघु बैंकों की श्रेणी में एन.एफ.एस एटीएम नैटवर्क के लिए राष्ट्रीय भुगतान उत्कृष्टता अवार्ड, 2015 का संयुक्त उपविजेता घोषित किया गया।

# अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक श्री जतिन्दरबीर सिंह (आई.ए.एस.) द्वारा आंचलिक कार्यालय भोपाल का दौरा